सौंदर्य चेहरे
के रंग
में नहीं
है लेकिन
सत्य में है।
-महात्मा गांधी-

दैनिक
लोक जीवन
www.lokjeewan.com
जयपुर एवं भीलवाड़ा से प्रकाशित राज्य स्तरीय समाचार पत्र
संस्थापक - स्व. डॉ. शिवकुमार जी त्रिवेदी

लोक जीवन में विज्ञापन
के लिए सम्पर्क करें:-
- : जयपुर : -
0141-4038281
- : भीलवाड़ा : -
8306792625

वर्ष- 19 | अंक- 193 | जयपुर. गुरुवार . | 12 नवम्बर , 2026 | RNI No. RAJHIN/2008/26744 | मूल्य 1 रूपया | पृष्ठ - 4

न्यूज इनबॉक्स

उत्तरी हवाओं से बढ़ी ठंड, 15 नवंबर के बाद सर्दी पकड़ेगी जोर

जयपुर (कासं)। राजस्थान में न्यूनतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई। नागौर, प्रतापगढ़, सीकर, पाली, जयपुर, उदयपुर में न्यूनतम तापमान 5 डिग्री तक गिर गया। पहाड़ी राज्यों में मौसम साफ रहने से राजस्थान समेत अन्य मैदानी राज्यों में उत्तरी हवा के असर से तापमान में गिरावट हुई। हालांकि, दिन में अब भी गर्मी है। विशेषकर पश्चिमी राजस्थान वाले जिलों में दिन का तापमान अब भी 35 से 38 डिग्री के बीच ही दर्ज हो रहा है। मौसम विभाग के अनुसार 15 नवंबर के बाद सर्दी बढ़ सकती है। पिछले 24 घंटों के दौरान सबसे ठंडा इलाका सीकर रहा, जहां न्यूनतम तापमान 12.5, फतेहपुर में 12.7, माउंट आबू में 13.1, नागौर में 13.5, सिरोही में 13.8, भीलवाड़ा में 14.4, उदयपुर में 14.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। इभरतपुर, करौली, अलवर, गंगानगर के एरिया में मंगलवार सुबह-शाम हल्की धुंध, कोहरा रहा। राज्य के कुछ शहरों में दिन के अधिकतम तापमान में मामूली गिरावट हुई। बाड़मेर में सबसे अधिक अधिकतम तापमान 37.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। चित्तौड़गढ़ में 36, जैसलमेर में 35.8, पाली में 35.6, जोधपुर में 35.5, डूंगरपुर, कोटा में 34.2, उदयपुर और भीलवाड़ा में 34 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। मौसम विज्ञान केन्द्र जयपुर ने राज्य में अगले एक सप्ताह तक आसमान साफ रहने की संभावना जताई है। इस दौरान दिनभर धूप रहने और कुछ शहरों के अधिकतम तापमान में मामूली बढ़ोतरी होने की संभावना है। हालांकि, रात में सर्दी तेज हो सकती है।

मॉर्निंग वॉक के दौरान बेहोश होकर गिरे पूर्व उपराष्ट्रपति धनखड़

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की तबीयत बुधवार सुबह अचानक बिगड़ गई। मॉर्निंग वॉक के दौरान वह बेहोश होकर गिर पड़े। इसके बाद उन्हें दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया है। सूत्रों के मुताबिक, 75 वर्षीय धनखड़ को अस्पताल के कार्डियो-न्यूरो सेंटर में भर्ती किया गया है, जहां कार्डियोलॉजी विभाग के डॉक्टर उनकी जांच और इलाज कर रहे हैं। सामने आया है कि बुधवार सुबह टहलने के दौरान जगदीप धनखड़ अचानक बेहोश होकर गिर पड़े और कुछ मिनट तक बेहोश रहे। उनके साथ मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें पीसीआर वाहन से घर पहुंचाया। इसके बाद इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलियरी साइंसेज की मेडिकल टीम और एम्स के डॉक्टर संदीप सेठ ने उनकी जांच की और जरूरी चिकित्सा सहायता दी। शुरूआती चिकित्सा सहायता मिलने के बावजूद उनकी स्वास्थ्य स्थिति को लेकर चिंता बनी हुई थी। इसे देखते हुए उन्हें एंबुलेंस से दिल्ली एम्स ले जाया गया। यहां उन्हें अस्पताल के कार्डियो-न्यूरो सेंटर में भर्ती कराया गया है। फिलहाल कार्डियोलॉजी विभाग की निगरानी में उनकी मेडिकल जांच और इलाज चल रहा है। पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की मौजूदा स्वास्थ्य स्थिति के बारे में फिलहाल विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। बता दें कि जगदीप धनखड़ अगस्त 2022 में भारत के 14वें उपराष्ट्रपति बने थे। उन्होंने जुलाई 2025 में उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया था।

नवी मुंबई देश का सबसे साफ शहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के सबसे साफ शहरों की नई सूची सामने आ गई है। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में महाराष्ट्र के नवी मुंबई ने स्वच्छ शहर लीग श्रेणी में पहला स्थान हासिल किया है। इस श्रेणी में गुजरात का सूरत दूसरे और आंध्र प्रदेश का विजयवाड़ा तीसरे स्थान पर रहा। वहीं, मध्य प्रदेश के रीवा और उत्तराखंड के रुद्रपुर ने विशेष श्रेणियों में पहला स्थान हासिल किया है। केंद्र सरकार के इस सालाना सर्वेक्षण में देशभर के शहरों की सफाई, कचरा प्रबंधन और स्वच्छता व्यवस्था का आकलन किया गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार 2025-26 प्रदान किए। स्वच्छ भारत मिशन-शहरी के तहत उन शहरों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने सफाई और शहरी स्वच्छता के क्षेत्र में बेहतर काम किया है। यह स्वच्छ सर्वेक्षण का दसवां संस्करण है। इस बार सर्वेक्षण का विषय 'स्वच्छता की नई पहल-बढ़ाएं हाथ, करें सफाई साथ' रखा गया। इसका उद्देश्य शहरों को साफ रखने में स्थानीय निकायों के साथ आम लोगों की भागीदारी बढ़ाना है।

स्वच्छ शहर लीग श्रेणी में नवी मुंबई सबसे आगे रहा। इसके बाद सूरत और विजयवाड़ा को स्थान मिला। इस श्रेणी में शहरों की सफाई व्यवस्था, कचरे के निपटान और स्वच्छता से जुड़े कामों का मूल्यांकन किया जाता है। इसका मकसद नगर निकायों को बेहतर सफाई व्यवस्था बनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। सरकार चाहती है कि शहरों में नियमित सफाई हो, कचरे का उचित प्रबंधन किया जाए और लोगों को साफ वातावरण मिले।

77 हजार करोड़ के पैकेज से विकास को रफ्तार, किसानों-कारोबारियों को बड़ी राहत

रबी सीजन के लिए 62,370 करोड़ की उर्वरक सब्सिडी, नोएडा-ग्रेटर नोएडा मेट्रो और राष्ट्रीय संग्रहालय को भी मंजूरी



नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने देश में कृषि, उद्योग, शहरी परिवहन और सांस्कृतिक विरासत के विकास को गति देने के लिए 77,101 करोड़ रुपये के विभिन्न प्रस्तावों को मंजूरी दी है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में बुधवार को हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में किसानों को उर्वरक सब्सिडी, सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को ऋण सहायता, नोएडा-ग्रेटर नोएडा मेट्रो परियोजना तथा राष्ट्रीय संग्रहालय के निर्माण से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट के निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया कि इन फैसलों से किसानों, छोटे कारोबारियों और शहरी क्षेत्रों को सीधा लाभ मिलने की उम्मीद है।

कैबिनेट ने रबी विपणन सत्र 2026-27 के लिए पोषक तत्व आधारित उर्वरक सब्सिडी (एनबीएस) की दरों को मंजूरी दी है। इसके लिए 62,370 करोड़ रुपये का बजटीय प्रावधान किया गया है। इसका उद्देश्य किसानों को डीएपी, एनपीकेएस सहित फॉस्फेटिक और पोटाश उर्वरक किफायती दरों पर उपलब्ध कराना है। इस निर्णय से आगामी रबी बुवाई के दौरान उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। साथ ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में उर्वरकों और कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ाव का बोझ किसानों पर कम करने में सहायता मिलेगी। सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को संस्थागत ऋण उपलब्ध कराने और नए कारोबारियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने कुल 9,111 करोड़ रुपये के दो क्रेडिट गारंटी फंड को मंजूरी दी है। इनमें क्रेडिट गारंटी फंड फॉर माइक्रो यूनिट्स के लिए 5,000 करोड़ रुपये और क्रेडिट गारंटी फंड फॉर स्टैंड-अप इंडिया के लिए 4,111 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

इन योजनाओं का उद्देश्य छोटे उद्यमियों को बैंक एवं वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्त करने में सहायता देना है। विशेष रूप से महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उद्यमियों को अपना कारोबार शुरू करने तथा उसका विस्तार करने में मदद मिलेगी। क्रेडिट गारंटी व्यवस्था से वित्तीय संस्थानों को ऋण उपलब्ध कराने में सहूलियत होगी और छोटे कारोबारियों के लिए वित्तीय संसाधनों तक पहुंच आसान बनेगी। दिल्ली-एनसीआर में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए कैबिनेट ने नोएडा-ग्रेटर नोएडा मेट्रो रेल परियोजना को मंजूरी दी है। इस परियोजना पर करीब 2,390 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। मेट्रो नेटवर्क के विस्तार से दोनों शहरों के बीच आवागमन अधिक सुविधाजनक होगा। इससे औद्योगिक और आवासीय क्षेत्रों के बीच कनेक्टिविटी बेहतर होने के साथ दैनिक यात्रियों को सार्वजनिक परिवहन का बेहतर विकल्प मिलेगा। इसके अलावा सड़कों पर यातायात का दबाव कम करने में भी मदद मिल सकती है। देश की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत को प्रदर्शित करने के लिए नई दिल्ली में 'युगे युगीन भारत संग्रहालय' विकसित किया जाएगा। इसके निर्माण और विकास के लिए 3,230 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है। यह संग्रहालय ऐतिहासिक नॉर्थ और साउथ ब्लॉक परिसर में विकसित किया जा रहा है। इसमें भारत की प्राचीन सभ्यता, इतिहास, कला, संस्कृति और विरासत को आधुनिक संग्रहालयीय सुविधाओं के माध्यम से प्रदर्शित करने की योजना है।

कृषि से उद्योग तक विकास को मिलेगा संबल

केंद्र सरकार के इन फैसलों को कृषि, उद्यमिता, शहरी बुनियादी ढांचे और सांस्कृतिक विरासत के विकास से जोड़कर देखा जा रहा है। उर्वरक सब्सिडी से रबी फसलों की बुवाई के दौरान किसानों को राहत मिलेगी, जबकि क्रेडिट गारंटी फंड से छोटे कारोबारियों और नए उद्यमियों के लिए ऋण की उपलब्धता आसान बनाने में मदद मिलेगी।

वहीं, मेट्रो परियोजना से दिल्ली-एनसीआर की परिवहन व्यवस्था को मजबूती मिलेगी और राष्ट्रीय संग्रहालय के निर्माण से देश की ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित करने तथा उसे आमजन तक पहुंचाने का अवसर मिलेगा। कुल मिलाकर कैबिनेट के इन फैसलों के जरिए सरकार ने कृषि क्षेत्र को आर्थिक संबल देने, छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करने और बुनियादी सुविधाओं के विस्तार पर जोर दिया है।

खरगे जी के बयानों में नजर आ रही है उनकी बढ़ती उम्र का असरः राठौड़

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खरगे सहित सोनिया गांधी की पुस्तक पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि खरगे जी की हिन्दुओं के त्यौहार पर दी गई प्रतिक्रिया उनकी उम्र होने का संकेत दे रही है। उनकी बढ़ती उम्र का ही असर कहा जाएगा कि कभी वो क्या बोल देते है तो कभी उनकी जुबान लडखड़ा जाती है।



खरगे कभी देश के प्रधानमंत्री के पिता के लिए बोल जाते है, कभी दिवाली की तुलना ईद से करते है। हर त्यौहार का हर समाज में अलग महत्व, अलग प्रसंग होता है। अगर वे संबंधित प्रसंग पर ही बोलते तो शायद उचित होता लेकिन एक समाज विशेष को खुश करने के लिए कुछ भी बोल रहे है, यह उचित नहीं है। राठौड़ ने कहा कि खरगे शायद भूल गए कि उनके परिवार को किसने यातनाएं दी, उनकी माता जी, भाई, बहन को किसने जलाकर मार दिया। इसके बावजूद वे इस स्तर की बयानबाजी कर रहे है तो ये ही कहा जा सकता है कि उम्र का असर अब उनकी बातों में स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने सोनिया गांधी की पुस्तक में आपातकाल मामले में संजय गांधी को शामिल करने पर कहा कि जब तक संजय गांधी जी जिंदा थे तब तक इंदिरा जी हो, राजीव जी हो या फिर सोनिया जी हो, उनकी व्यवस्था से चलते थे। उनके मरणोपरांत उनकी आलोचना करना सही नहीं है। वे जीवित थे तब तो उनकी व्यवस्था के अनुसार चलना और मरणोपरांत उन्हें कठघरे में खड़ा करना सही नहीं है। आपातकाल इंदिरा गांधी परिवार का सामूहिक निर्णय था। आपातकाल लोकतंत्र के इतिहास में काला अध्याय माना जाता है। इंदिरा गांधी ने लोकतंत्र की हत्या की थी। प्रेस की आजादी छीन ली गई, युवाओं की जबरन नसबंदी कर दी गई थी, यहां तक की भारत माता की जय बोलने वालों को जेल में बंद कर दिया गया था, इसे कांग्रेस को स्वीकार करना चाहिए। ये सब सिर्फ एक व्यक्ति के माथे डालकर तत्कालीन प्रधानमंत्री कैसे बच सकती है! यदी वे ये कह रहे है कि वो परोक्ष रूप से सरकार चलाता था तो ये और भी शर्मनाक है।

मुख्यमंत्री ने बीएसएफ के जवानों के साथ मनाया भाई-दूज

बीएसएफ देश की संप्रभुता, अखंडता और राष्ट्रीय स्वाभिमान का सशक्त प्रहरी- मुख्यमंत्री

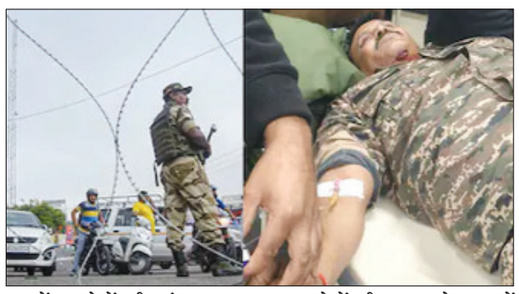




जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को जैसलमेर स्थित तनोट माता मंदिर परिसर में भाई-दूज समारोह में शिरकत की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की महिला जवानों से रक्षा सूत्र बंधवाकर और उनसे संवाद कर भाई-दूज पर्व की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि भाई-दूज का पर्व भाई-बहन के स्नेह, विश्वास और सुरक्षा के संकल्प का प्रतीक है। इस पर्व के माध्यम से उन बहनों की भावनाओं को नमन, जिनके भाई परिवार से दूर रहकर सीमाओं की सुरक्षा का दायित्व निभा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि बीएसएफ देश की संप्रभुता, अखंडता और राष्ट्रीय स्वाभिमान का सशक्त प्रहरी है। दिन हो या रात, गर्मी हो या सर्दी, बीएसएफ के जवान सदैव सीमाओं पर मुस्तैद रहकर राष्ट्र की सुरक्षा करते हैं। हमारी बेटियां भी देश की सुरक्षा में अपनी क्षमता, साहस और समर्पण का परिचय दे रही हैं। बीएसएफ की महिला जवानों ने कठिन परिस्थितियों में साहस, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा से नई मिसाल कायम की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना और बीएसएफ के जवानों ने पराक्रम का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। वहीं, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में सीमा सुरक्षा को और मजबूत बनाने के लिए बेहतर आधारभूत सुविधाओं तथा मजबूत समन्वय पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। स्मार्ट बॉर्डर की परिकल्पना के अनुरूप सीमा सुरक्षा व्यवस्था को आधुनिक बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि घुसपैठ की वजह से सीमांत क्षेत्रों में जनसांख्यिकी परिवर्तन हो रहा है। ऐसे में, देश को घुसपैठ मुक्त बनाने के लिए एक मजबूत तंत्र का निर्माण किया जा रहा है। इसके लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में घुसपैठ की समस्याओं की जड़ों पर प्रहार करते हुए स्थायी समाधानों पर काम हो रहा है। इसी क्रम में बॉर्डर पर आधारभूत संरचना के विकास के लिए आवंटित बजट में 400 प्रतिशत वृद्धि भी की गई है। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि राज्य सरकार की ओर से जवानों की सुरक्षा, सम्मान, सुविधा एवं कल्याण में कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी। सीमा क्षेत्रों में पानी की समस्या से निजात पाने के लिए पर्याप्त फण्ड उपलब्ध करवाया जा रहा है। प्रधानमंत्री के संकल्प के अनुरूप वाइब्रेंट विलेजेज कार्यक्रम के माध्यम से देश के अंतिम गांव को प्रथम गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसके तहत पलायन रोकने, रोजगार के अवसर बढ़ाने और सरकारी योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ पहुंचाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। प्रदेश में वाइब्रेंट विलेजेज प्रोग्राम-2 के तहत बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर और श्रीगंगानगर जिलों के 184 सीमावर्ती गांवों को विकास के लिए चयनित किया गया है। वर्ष 2029 तक नशामुक्त भारत के लक्ष्य को लेकर राज्य सरकार भी पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। प्रदेश में एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स का गठन किया गया है। वहीं, 350 से अधिक महाविद्यालयों में नई किरण नशामुक्ति केंद्र भी स्थापित किए गए हैं। इससे पहले मुख्यमंत्री ने विजय स्तंभ पर पुष्पचक्र अर्पित कर राष्ट्र की सुरक्षा में अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

कुलगाम में सीआरपीएफ नाके पर आतंकी हमला, तीन जवान घायल

जम्मू (एजेंसी)। दक्षिण कश्मीर के आखरन-नौपुरा, कुलगाम में बुधवार को एक आतंकी हमले में तीन सीआरपीएफ जवान घायल हो गए। हमले के बाद भागने में कामयाब रहने आतंकियों को पकड़ने के लिए सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके की घेराबंदी करते हुए तलाशी अभियान चलाया है। हालांकि, किसी आतंकी संगठन ने तत्काल इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है, लेकिन माना जा रहा है कि यह हमला लश्कर-ए-तैयबा का हिट स्क्वाड कहे जाने वाले 'द रजिस्टेंस फ्रंट टीआरएफ' के आतंकी लतीफ बट के माड्यूल ने किया है। जानकारी के अनुसार, कुलगाम के आखरन नौपुरा में बुधवार की दोपहर को सीआरपीएफ 46वीं वाहिनी के जवानों ने एक नाका लगाया हुआ था। नाका पार्टी वहां से गुजरने वाले



वाहनों व लोगों की जांच पड़ताल कर रही थी। लगभग 2:15 बजे के करीब मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक नाके के पास पहुंचे और उन्होंने सीआरपीएफ जवानों पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। इससे वहां मौजूद आम लोगों में अफरा तफरी मच गई। तीन सीआरपीएफ जवान घायल होकर जमीन पर गिर पड़े। अन्य जवानों ने अन्य जवानों ने उसी समय मोर्चा संभालते हुए जवाबी फायर किया, लेकिन उन्होंने वहां फैली अफरा-तफरी के बीच आम लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कुछ संयम बरता, जिसका लाभ लेकर आतंकी भागने में कामयाब रहे। हमले की सूचना मिलते ही निकटवर्ती शिविरों से सुरक्षाबलों की अतिरिक्त टुकड़ियां भी मौके पर पहुंच गई।

उन्होंने उसी समय पूरे इलाके की घेराबंदी करते हुए घायल जवानों को उपचार के लिए जीएमसी-अनंतनाग लाया गया।

घायल सीआरपीएफ जवानों के नाम

1. सीटी/जीडी राकेश दास, पुत्र अरूण दास, निवासी असम
2. सीटी/जीडी संतोष चंद्रू, पुत्र महावीर, निवासी बंगाल
3. एचसी/जीडी सोमवीर सिंह, पुत्र महावीर, निवासी मध्य प्रदेश।

डाक्टरों के अनुसार, एक जवान की टांग में, दूसरे की बाजू में और तीसरे की पीठ में गोली लगी है। जवान संतोष चंद्रू की हालत गंभीर बताई जा रही है।

हमलावरों की तलाश में कई इलाकों में तलाशी अभियान

इस बीच, सुरक्षाबलों ने घटनास्थल के आस पास के सभी इलाकों में तलाशी अभियान चलाया है। घटनास्थल के आस पास उपलब्ध सभी सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की भी जांच की जा रही है। सीआरपीएफ, पुलिस और सेना के वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए हैं।

अदालतों में अब शाम को भी होगी सुनवाई, तीन राज्यों में इवनिंग कोर्ट शुरू करेगी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। अदालतों में लंबित मामलों के शीघ्र निपटारे और अदालती बोझ कम करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने तीन राज्यों दिल्ली, बिहार और आंध्र प्रदेश में सांध्यकालीन अदालतें शुरू करने का फैसला किया है। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन मेघवाल ने इसकी जानकारी दी है। एक इंटरव्यू में केंद्रीय मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार फिलहाल पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर इस साल के अंत तक दिल्ली, बिहार और आंध्र प्रदेश में 'इवनिंग कोर्ट' शुरू करने जा रही है। मेघवाल ने इस बात पर जोर दिया कि सरकार चाहती है कि देशभर की अदालतों में वर्षों से लंबित मामलों की जल्द सुनवाई हो और न्याय सुनिश्चित किया जा सके। इसी कड़ी में सांध्यकालीन अदालतें शुरू करने की नीति पर पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर काम शुरू किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस नई और प्रस्तावित व्यवस्था के तहत जो अदालतें अभी दिन के समय काम करती हैं, वे शाम को कुछ अतिरिक्त घंटों तक भी काम करेंगी, ताकि लंबित मामलों की सुनवाई की जा सके और उन्हें निपटाया जा सके।

केंद्रीय मंत्री ने आगे बताया कि केंद्र सरकार इन शाम के सत्रों के लिए सेवानिवृत्त (रिटायर्ड) जजों की सेवाएं लेने की भी योजना बना रही है। उन्होंने यह भी बताया कि यह पहल संबंधित राज्यों के हाई कोर्ट्स के सहयोग से शुरू की जाएगी। मेघवाल ने बताया कि शुरुआती तीन राज्यों में इस पायलट प्रोजेक्ट को शुरू किया जाएगा और उसका व्यापक मूल्यांकन किया जाएगा। इसके बाद, केंद्र सरकार इस मॉडल को अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में भी लागू करने पर विचार करेगी।

'इवनिंग कोर्ट' शुरू करने के अलावा, केंद्रीय मंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि सरकार अदालतों पर पड़ने वाले बोझ को कम करने के लिए अन्य विकल्पों (अल्टरनेटिव मैकेनिज्म) का भी सहारा ले रही है।

उन्होंने बताया कि सरकार इस संबंध में लोक अदालतों और 'अल्टरनेटिव डिस्प्यूट रेजोल्यूशन' यानी विवादों को सुलझाने के वैकल्पिक तरीकों के जरिए मामलों के निपटारे पर भी विचार कर रही है।

दैनिक लोकजीवन
जयपुर एवं भीलवाड़ा से एक साथ प्रकाशित
संपादक - स्व. डॉ. विनयकुमार जी विसरी

एआई और सोशल मीडिया के दौर में सच-झूठ की पहचान बड़ी चुनौती

खबरों की जांच करने के लिए पहला कदम होना चाहिए, उसके स्रोत की खोज। खबरें किस तरह से आ रही हैं, कहां से आ रही हैं और क्या उसके साथ कोई सार्थक नाम भी है? अगर खबर के स्रोत का पता चल जाता है तो फिर उसकी सच्चाई भी उजागर हो जाती है। वह खबर किसी समाचार एजेंसी की है या फिर किसी जाने-माने समाचार पत्र-पत्रिका या टीवी चैनल की है तो फिर बात बन जाएगी। खबर के स्रोत का ध्यान रखना जरूरी है। इसी से उसकी प्रामाणिकता की जांच होती है। सोशल मीडिया पर सैकड़ों छोटे-छोटे चैनल हैं जो खबरें परोसते हैं। उन सभी का एक ही उद्देश्य होता है, अधिक से अधिक व्यू लेना। वे इसके लिए जाल बुनते हैं, खबरों को सनसनीखेज बनाते हैं और चटकारे लेने के अंदाज में या चौंकाने वाले अंदाज में उन्हें पेश करते हैं। कुछ चैनल 'शूट एंड स्कूट' के जरिये व्यूज बटोरते हैं। इसमें कोई झूठी खबर फैला दी जाती है और बाद में उसे हटा दिया जाता है। तब तक वह खबर वायरल हो जाती है और यूट्यूबर अथवा चैनल चलाने वाले का मकसद पूरा हो जाता है। किसी जमाने में इस तरह की खबरें पेश करने वालों को अच्छी निगाहों से नहीं देखा जाता था और ऐसी पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहते थे। ऐसी खबरों पर यकीन करने के पहले उसके स्रोत को जरूर जान लें। ये किसी खास मंशा से परोसी जाती हैं। कोरोना काल में ऐसी सैकड़ों खबरें फैलाई जा रही थीं जिनका सच्चाई से कोई लेना-देना नहीं था। कई दवाइयों के नाम फैलाये जा रहे थे और कहा जा रहा था कि इनसे कोरोना रुक सकता है या मरीज ठीक हो सकता है। इसमें बाबा रामदेव की दवा कोरोनिल भी थी जिसके लिए उन्हें काफी लानत-मानत झेलना पड़ा था। प्राकृतिक आपदा के उस कठिन समय में यह साबित करना बड़ा मुश्किल था कि यह खबर सच्ची है या फिर ये दवा अच्छी है। तरह-तरह के दावे पेश किए जा रहे थे और समाचार पत्रों के लिए सच का पता लगाना कठिन होता जा रहा था। लेकिन उस समय भी कई समाचार पत्रों ने बहुत बढ़िया कार्य किया और दूध का दूध, पानी का पानी कर दिखाया।

उन्होंने सोशल मीडिया पर छाई हुई खबरों को सही ढंग से समझा और फर्जी खबरों तथा दावों को उजागर किया। खबरों को पढ़कर स्वविवेक से भी थोड़ा बहुत जाना जा सकता है कि इसमें सच्चाई कितनी है। सोशल मीडिया पर बहुत सी खबरें फ्लैशी होती हैं। थोड़े से प्रयास से पता चल जाता है कि ये फर्जी हैं और किसी उद्देश्य विशेष से परोसी गई हैं। व्यूज लेने के अलावा सोशल मीडिया में अपना एजेंडा चलाने के आतुर लोग भी खबरें डालते हैं। इसमें राजनीतिक दल के लोग, उनके समर्थक और पेड यूट्यूबर बड़ी संख्या में शामिल हैं। अभी हाल ही में एक खुलासा हुआ जिसमें यूपी के एक बड़े नेता के पक्ष में इंस्टाग्राम में संबंधित खबरें चलाने के लिए कई सोशल मीडिया हैंडलर ने अपनी-अपनी फीस बता दी। इससे यह तो पता चल गया कि सोशल मीडिया पर ज्यादातर सामग्री पेड है। इसकी खबरों पर विश्वास करना जोखिम भरा हो सकता है। वहां पक्षपातपूर्ण खबरें भी हैं और पेड खबरें भी हैं। बड़ी मासूमियत से लिखी हुई खबरें भी हैं जो सीधे दिमाग में उतर जाती हैं। इसलिए वहां पूरी सावधानी की जरूरत है। खोजी गूगल जो दुनिया का सबसे बड़ा सर्च इंजिन है, बहुत विश्वसनीय नहीं माना जाता है लेकिन नए मेटा पर आप काफी हद तक विश्वास कर सकते हैं क्योंकि यह गहराई में जाकर खबरें बताता है। यह अपने स्रोत भी बताता है जिससे खबर की प्रामाणिकता का पता चलता है। स्मार्टफोन और 5 जी इंटरनेट के इस युग में इस माध्यम का इस्तेमाल करना एक बढ़िया तरीका है। इंटरनेट पर सभी बड़े अखबार और समाचार एजेंसियां सक्रिय हैं जो आपको पल-पल की खबरें देती रहती हैं। इंस्टाग्राम या यूट्यूब पर आपको कोई ऐसी कोई खबर दिखे तो फौरन उपरोक्त तरीका अपनाएं, सच्चाई उजागर हो जाएगी। झूठी खबरें खोटे सिक्कों की तरह होती हैं जो जल्दी चल जाती हैं। इस कारण से कई मीडिया हाउसेज ने फर्जी खबरों की जांच के लिए व्यवस्था कर रखी है। भारत सरकार के प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो ने भी फैक्ट चेक के लिए एक विशेष इकाई बना रखी है। उसने सैकड़ों झूठी खबरों का पर्दाफाश भी किया है। एआई की उत्पत्ति से जितने फायदे हुए हैं उससे कम नुकसान भी हुए हैं। कई तरह की खबरें लिखी जा रही हैं और उनके साथ ऐसे चित्र लगाए जा रहे हैं जो हूबहू लगते हैं। ऐसे में समाचार पत्रों के संवाददाताओं के लिए बड़ी समस्या खड़ी हो रही है। उनके लिए यह तय करना कि कौनसी खबर फर्जी है और कौन असली, कठिन चुनौती है। उनके पास समय का अभाव होता है क्योंकि उन्हें कई सारी खबरें एक निश्चित समय पर फाइल करनी होती है। इसमें गलती होने की गुंजाइश रहती है। यह स्वाभाविक सी बात है और ऐसी स्थिति में वह कर भी क्या सकता है।

इन दिनों पत्रकारों के लिए भी यह पता लगाना मुश्किल होता जा रहा है कि कौनसी खबर सही या प्रामाणिक है और कौन फर्जी। कई बार तो सच्ची खबरें ऐसी लगती हैं कि फर्जी हैं जबकि फर्जी खबरें असली लगती हैं। इसका कारण यह है कि वे दिमाग पर तेजी से असर डालती हैं, उनमें चौंकाने वाले तत्व होते हैं और वे लिखी भी ग्राह्य ढंग से जाती हैं। ऐसी खबरों के कारण समाचार पत्रों के संपादकों को यह समस्या होती है कि वे उन्हें पहचानें कैसे? कौनसी खबर फर्जी या झूठी है, यह जानना कठिन हो जाता है।

पाठक के लिए तो ये खबरें बिल्कुल प्रामाणिक सी लगती हैं और वे उन पर सहज विश्वास भी कर लेते हैं। ऐसी खबरें काफी समय तक प्रामाणिक या सच बनकर मीडिया के ब्रह्मांड में घूमती रहती हैं और उस विषय से संबंधित सच्ची खबरों की काफी समय तक उपेक्षा की जाती रहीं। ऐसा नहीं है कि यह स्थिति भारत में ही है, बल्कि सारी दुनिया इस बीमारी से जूझ रही है और असल तथा नकल में पहचान करना मुश्किल होता जा रहा है। ये खबरें इतनी विश्वसनीय ढंग से पेश की जाती हैं कि उन्हें सच्चा मानना ही पड़ता है। इससे समाज को बहुत नुकसान होता है, विश्वसनीयता का संकट खड़ा हो जाता है। कोरोना काल में हमने देखा कि हजारों समाचार हमारे सामने आ रहे थे और हम जाने-अनजाने में उन पर विश्वास कर रहे थे। अखबारों, टीवी चैनलों, न्यूज वेबसाइटों के लिए बड़ी संकटपूर्ण स्थिति थी। उस दौरान जब हालात ऐसे नहीं थे कि संवाददाता बाहर निकल कर हमेशा रिपोर्टिंग करे, तो ऐसे में चारों ओर से फर्जी खबरें आ रही थीं।

महंगाई और बेरोजगारी के बीच उलझी आर्थिक खुशहाली

भारतीय रिजर्व बैंक के अक्टूबर 2026 के अनुमानों के अनुसार वित्त वर्ष 2026-27 में खुदरा मुद्रास्फीति 5.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। खाद्य पदार्थों और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव से घरेलू बजट प्रभावित होता है। महंगाई का सबसे अधिक प्रभाव निम्न आय वर्ग और मध्यम वर्ग पर पड़ता है। इन परिवारों की आय का बड़ा हिस्सा भोजन, किराया, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन जैसी आवश्यकताओं पर खर्च हो जाता है।

खाद्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि उनके घरेलू बजट को असंतुलित कर देती है। आम परिवारों की आर्थिक स्थिति को समझने के लिए उनकी घटती बचत और बढ़ती कर्ज निर्भरता पर भी ध्यान देना आवश्यक है। क्रेडिट इन्फॉर्मेशन ब्यूरो लिमिटेड के आंकड़ों के अनुसार जिन लोगों ने गोल्ड लोन लिया है उनमें से 20 प्रतिशत वो लोग हैं जिनका पर्सनल लोन विलंबित है। पांच में से एक गोल्ड लोन उधार लेने वाला जेन जेड है जिन्होंने अपने माता-पिता के गोल्ड की एब्स में उधार लिया है। गोल्ड लोन वे लोग ले रहे हैं जो पहले खुशहाल स्थिति में थे। यदि परिवार अपनी नियमित जरूरतों और घरेलू खर्चों को पूरा करने के लिए सोना गिरवी रखकर कर्ज लेने लगें तो यह घरेलू आर्थिक दबाव का संकेत हो सकता है। बचत में कमी और कर्ज पर बढ़ती निर्भरता भविष्य की आर्थिक सुरक्षा के लिए भी चिंता का विषय है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भी बढ़ती जीवनयापन लागत, सार्वजनिक सेवाओं पर खर्च में कमी और आर्थिक असमानता के विरुद्ध लोगों का असंतोष सामने आ रहा है। आम नागरिक यदि स्थिर आय के अभाव, बढ़ती कीमतों और असुरक्षित रोजगार के बीच संघर्ष करता रहे तो ऊंची विकास दर उसके लिए अपेक्षित खुशहाली का आधार नहीं बन सकती। इसलिए सरकार की प्राथमिकता केवल जीडीपी वृद्धि की गति बनाए रखने के साथ-साथ स्थायी रोजगार सृजन, कृषि क्षेत्र की मजबूती, महंगाई पर नियंत्रण, सार्वजनिक सेवाओं में सुधार और आम नागरिक की बचत बढ़ाने की भी होनी चाहिए। उद्योगों को प्रोत्साहन देने के साथ ऐसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है, जो अधिक रोजगार पैदा कर सकें। युवाओं को उनकी योग्यता के अनुरूप रोजगार उपलब्ध करवाना और छोटे उद्यमों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना भी जरूरी है। अंतत: आर्थिक विकास की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि देश की जीडीपी कितनी तेजी से बढ़ रही है, बल्कि इससे भी कि आम आदमी की आय कितनी बढ़ी, उसे कितना सुरक्षित रोजगार मिला, उसकी बचत में कितना सुधार हुआ और उसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सडक़ तथा पेयजल जैसी सुविधाएं कितनी बेहतर मिलीं। राष्ट्रीय समृद्धि का वास्तविक अर्थ तभी सार्थक होगा, जब आर्थिक विकास की चमक देश के प्रत्येक नागरिक के जीवन में खुशहाली लेकर आए। एक समस्या यह है कि गरीब और अमीर में अंतर बढ़ता जा रहा है। वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के बीच भारत की विकास दर का ऊंचा बने रहना निश्चित रूप से उत्साहजनक है। वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर 7.7 प्रतिशत रही, जबकि वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में अर्थव्यवस्था ने 7.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत की अनुमानित विकास दर को भी 6.6 प्रतिशत से संशोधित करके 7 प्रतिशत कर दिया है। ये आंकड़े भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती और विकास की संभावनाओं को दर्शाते हैं। विश्व बैंक की अक्टूबर 2026 की 'गरीबी एवं समानता रिपोर्ट' के अनुसार, भारत में अत्यधिक गरीबी में जीवनयापन करने वाले लोगों का अनुपात वर्ष 2011 में 27.1 प्रतिशत था, जो वर्ष 2023 में घटकर मात्र 2.6 प्रतिशत रह गया है। यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। रिपोर्ट में बढ़ती खपत, रोजगार के अवसरों और खाद्य सब्सिडी सहित विस्तारित सामाजिक कल्याण योजनाओं के योगदान को भी स्वीकार किया गया है। लेकिन वर्तमान में स्थायी रोजगार के अभाव और महंगाई से त्रस्त जनता को देखते हुए इन उत्साहजनक आंकड़ों के बीच एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा होता है कि जब देश की अर्थव्यवस्था इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है तो आम नागरिक का जीवन आर्थिक रूप से आसान होने के बजाय कठिन क्यों होता जा रहा है? विकास दर में वृद्धि और आम आदमी की आर्थिक खुशहाली के बीच दिखाई देने वाला यह अंतर गंभीर विचार-विमर्श की मांग करता है।

भारतीय रिजर्व बैंक के अक्टूबर 2026 के अनुमानों के अनुसार वित्त वर्ष 2026-27 में खुदरा मुद्रास्फीति 5.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। खाद्य पदार्थों और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव से घरेलू बजट प्रभावित होता है। महंगाई का सबसे अधिक प्रभाव निम्न आय वर्ग और मध्यम वर्ग पर पड़ता है। इन परिवारों की आय का बड़ा हिस्सा भोजन, किराया, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन जैसी आवश्यकताओं पर खर्च हो जाता है।

इन उपलब्धियों के उत्साह में उन चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए, जो आज भी हमारे सामने मौजूद हैं। वर्ष 2026 के वैश्विक भुखमरी सूचकांक में 122 देशों में भारत का 100वां स्थान इस बात की याद दिलाता है कि आर्थिक विकास अपने आप पर्याप्त पोषण और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की गारंटी नहीं देता। विश्व बैंक की रिपोर्ट भी लगातार बनी हुई आर्थिक असमानताओं की ओर संकेत करती है। मजदूरी में असमानता अब भी बनी हुई है। सरकारी नौकरियों के लिए लंबी कतारें देश में रोजगार की स्थिति को दर्शाती हैं। नियमित वेतन वृद्धि, सामाजिक सुरक्षा और अपेक्षाकृत स्थायी रोजगार की संभावना युवाओं को सरकारी नौकरियों की ओर आकर्षित करती है। युवाओं की परेशानी केवल नौकरी न मिलने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके माता-पिता ने जीवनभर की बचत उनकी शिक्षा पर खर्च की होती है। इसके बावजूद जब उन्हें योग्यता के अनुरूप सुरक्षित रोजगार नहीं मिलता तो परिवारों में निराशा बढ़ती है। जीडीपी देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य में वृद्धि को मापती है, लेकिन यह नहीं बताती कि इस अतिरिक्त आय का वितरण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच किस प्रकार हुआ है। यह भी जरूरी नहीं कि उत्पादन बढ़ने के अनुपात में रोजगार के अवसर बढ़ें। पूंजी प्रधान उद्योगों और तकनीक आधारित गतिविधियों से उत्पादन तथा कंपनियों का मुनाफा तेजी से बढ़ता है, लेकिन उनमें प्रत्यक्ष रोजगार का सृजन अपेक्षाकृत कम होता है। यदि कंपनियों के मुनाफे में तेजी से वृद्धि हो और कर्मचारियों के वेतन में अपेक्षित सुधार न हो तो आर्थिक विकास का लाभ सीमित वर्ग तक सिमटकर रह जाता है। वर्तमान परिस्थितियों में महंगाई आम आदमी के लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है। भारतीय रिजर्व बैंक के अक्टूबर 2026 के अनुमानों के अनुसार वित्त वर्ष 2026-27 में खुदरा मुद्रास्फीति 5.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। खाद्य पदार्थों और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव से घरेलू बजट प्रभावित होता है।

बढ़ती महंगाई और बाजार पर प्रशासनिक नियंत्रण एवं साझा जवाबदेही की आवश्यकता

विकास की असली सफलता तभी होगी, जब आर्थिक प्रगति का लाभ व्यापक जनसमुदाय तक पहुंचे। महंगाई के लिए केवल सरकार या व्यापारियों को दोषी ठहराना भी समस्या का पूरा समाधान नहीं है। किसान बीज, खाद, कीटनाशक, सिंचाई, मजदूरी और डीजल पर बढ़ते खर्च से जूझता है। मौसम की मार उसकी फसल और आमदनी दोनों को प्रभावित करती है। खेत से उपभोक्ता तक पहुंचने के बीच भंडारण, परिवहन, पैकेजिंग और खुदरा बिक्री की लागत भी जुड़ती है। इसलिए किसान को उचित मूल्य और उपभोक्ता को वाजिब कीमत दिलाने के लिए पूरी आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता जरूरी है। व्यापारी का उचित लाभ कमाना उसका अधिकार है, लेकिन जमाखोरी, कृत्रिम अभाव, गलत माप-तौल और अनुचित मुनाफाखोरी किसी भी परिस्थिति में स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए। सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी है कि आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 तथा उपभोक्ता संरक्षण और माप-तौल संबंधी कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करें। बाजारों में मूल्य सूची प्रदर्शित करवाना, बिल देना सुनिश्चित करना, शिकायतों की जांच करना और अनुचित व्यापारिक गतिविधियों पर कार्रवाई करना जरूरी है। हिमाचल प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों का पिछले तीन वर्षों से रुके पड़े महंगाई भत्ते का पांच फीसदी जारी करने से इस बार की दिवाली उनके लिए राहत का संदेश लाई है, लेकिन कर्मचारियों के कई वित्तीय लाभ और एरियर्स अभी भी पेंडिंग पड़े हुए हैं। ऐसे में कर्मचारियों से केवल संयम की अपेक्षा करना भी उचित नहीं है। दूसरी तरफ गरीब तबके के लोगों को बेहतर रोजगार, उचित मजदूरी, सस्ती स्वास्थ्य सेवाओं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की भी आवश्यकता है।



सरकार को कमजोर आय वाले परिवारों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाने होंगे, तभी समाज के सभी वर्ग हर्षोल्लास के साथ दिवाली मना पाएंगे। अंतत: महंगाई का समाधान किसी एक वर्ग को दोषी ठहराने से नहीं, बल्कि साझा जवाबदेही से निकलेगा। किसान को मेहनत का उचित मूल्य मिले, व्यापारी को न्यायसंगत लाभ मिले, उपभोक्ता को वाजिब कीमत पर वस्तुएं उपलब्ध हों और सरकार अपनी नीतियों के परिणामों के प्रति जवाबदेह रहे। राष्ट्र की वास्तविक समृद्धि उस दिन दिखाई देगी जब मेहनतकश परिवार अपनी कमाई से सम्मानपूर्वक जीवनयापन कर सके, बच्चों के भविष्य के लिए बचत कर सके और महीने का अंत आर्थिक चिंता के बजाय सुरक्षा की भावना के साथ कर सकें, यही लोकतंत्र की खूबसूरती होगी। इन दिनों जब भारत में त्योहारी सीजन की शुरुआत हो चुकी है तो बढ़ती महंगाई ने आम आदमी की थाली से स्वाद, परिवार के सपनों से सुकून और मेहनतकश इनसान की जिंदगी से वह छोटी-सी खुशहाली भी छीननी शुरू कर दी है, जिसके सहारे वह हर दिन बेहतर कल की उम्मीद में जीता है। महंगाई केवल कीमतों का बढ़ना नहीं, बल्कि आम आदमी की क्रयशक्ति, आर्थिक सुरक्षा और सम्मानजनक जीवन पर पडऩे वाला दबाव है। महंगाई की इस चुनौती को अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से अलग करके नहीं देखा जा सकता। 23 अक्टूबर 2026 को अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड ऑयल की कीमत लगभग 115 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई। पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्ष और समुद्री व्यापार मार्गों पर संकट ने तेल आपूर्ति को लेकर चिंताएं बढ़ाई हैं। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों के लिए आयात पर काफी निर्भर है, इसलिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होने का असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। महंगे तेल से आयात बिल बढ़ता है और पेट्रोल-डीजल, माल ढुलाई, कृषि उत्पादन तथा औद्योगिक गतिविधियों की लागत पर दबाव पड़ता है। परिवहन महंगा होने पर सब्जियों, फलों, दूध और अनाज को बाजार तक पहुंचाने का खर्च भी बढ़ जाता है। इस प्रकार तेल की कीमतों में लगी आग अंतत: आम आदमी की रसोई तक पहुंचने का खतरा पैदा करती है। भारत सरकार के सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के 12 अक्टूबर 2026 को जारी आंकड़ों के अनुसार, सितंबर में खुदरा महंगाई दर बढ़कर 5.54 प्रतिशत हो गई, जबकि अगस्त में यह 4.83 प्रतिशत थी। खाद्य महंगाई भी अगस्त के 5.97 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर में 7.74 प्रतिशत पहुंच गई। ग्रामीण क्षेत्रों में खुदरा महंगाई 6.08 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 4.88 प्रतिशत रही। खाद्य महंगाई की दर ग्रामीण क्षेत्रों में 8.06 प्रतिशत दर्ज की गई। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि आवश्यक वस्तुओं की कीमतों का दबाव विशेष रूप से ग्रामीण परिवारों के बजट को प्रभावित कर रहा है।

सीमित आय वाले परिवार अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा भोजन, आवास और परिवहन पर खर्च करते हैं। ऐसे में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में मामूली वृद्धि भी उनकी बचत को समाप्त कर देती है। मध्यम वर्ग के लिए भी स्थिति आसान नहीं है, क्योंकि शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी जरूरतें लगातार अधिक खर्च मांगती हैं। आर्थिक समस्याएं इस समस्या को और गंभीर बनाती हैं। मैं स्वयं उपभोक्ता हूं और देखता हूं कि खुद मेरे शहरों बैजनाथ-पपरोला में खाद्य पदार्थों/सब्जी इत्यादि के दामों पर प्रशासन का कोई चेक नहीं है और न ही प्रशासनिक उच्च अधिकारी/खाद्य नियंत्रक कभी बाजार जाकर रेटलिस्ट की जांच करते हैं। यही वजह है कि सभी विक्रेता मनमर्जी के रेट लगाकर ग्राहकों को लूट रहे हैं। दूसरी तरफ वर्ल्ड इनइक्वैलिटी रिपोर्ट 2026 के अनुसार, भारत की शीर्ष 10 प्रतिशत आबादी को राष्ट्रीय आय का लगभग 57.7 प्रतिशत हिस्सा मिलता है, जबकि निचली 50 प्रतिशत आबादी के हिस्से में केवल 15 प्रतिशत आय आती है। देश की लगभग 65 प्रतिशत संपत्ति शीर्ष 10 प्रतिशत लोगों के पास केंद्रित है। दूसरी ओर, विश्व बैंक के अक्टूबर 2025 के आकलन के अनुसार, प्रतिदिन तीन डॉलर की अंतरराष्ट्रीय गरीबी रेखा पर भारत में गरीबी का अनुपात 2011-12 के 27.1 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में 5.3 प्रतिशत रह गया। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है, लेकिन गरीबी में कमी और आर्थिक असमानता समाप्त होना अलग-अलग बातें हैं।

अग्निपथ के नए नियमों से बढ़ेंगी सेवा और स्थायित्व की संभावनाएं

भारत सरकार ने अग्निपथ योजना में परिवर्तन करके इसके अंतर्गत सैन्य बलों में शामिल हुए अग्निवीरों के लिए सेवा का दायरा बढ़ाया है। इन बदलावों की घोषणा ऐसे समय में जब 24,400 अग्निवीरों के पहले बैच का चार साल का सेवा कार्यकाल समाप्ति के करीब है, जिसमें से 75 प्रतिशत तक यानी 18,300 जवानों का सैन्य बलों से बाहर होना तय माना जा रहा था। जून 2022 में शुरू की गई अग्निपथ योजना के तहत आरंभ में अग्निवीरों की चार वर्षीय कार्यकाल के लिए भर्तियां की गईं, जिसमें मेरिट के आधार पर 25 प्रतिशत जवानों को नियमित सेवा में बनाए रखने का प्रावधान किया गया था। हालांकि सेवा की छोटी अवधि और रोजगार की अनिश्चितता को लेकर इस योजना को आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा। अब संशोधित नियमों के तहत चार वर्ष का शुरूआती कार्यकाल पूरा होने के बाद 25 प्रतिशत अग्निवीरों को मेरिट के आधार पर नियमित सशस्त्र बलों में शामिल किया जाएगा। शेष 75 प्रतिशत के पास स्वैच्छिक आधार पर अपनी सेवा को दो वर्ष बढ़ाने का विकल्प होगा। जबकि छह वर्ष पूरे होने पर सभी अग्निवीरों को उनकी सहमति और सेना द्वारा निर्धारित चयन मानदंडों के अधीन नियमित सैनिक के रूप में शामिल होने का अवसर भी दिया जाएगा। इन मानदंडों में संभवत: मेडिकल, शारीरिक दक्षता, पेशेवर सक्षमता और अनुशासन जैसे पैमाने होंगे।

सेवा विस्तार के बदले हुए नियमों में बढ़ा हुआ पारिश्रमिक, संवर्धित सेवा-निधि पैकेज और वरिष्ठता से संबंधित लाभ भी शामिल हैं, लेकिन अभी भी कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन पर स्पष्टता की आवश्यकता है। इनमें सेवा विस्तार के बाद नियमित किए जाने वाले जवानों की वरिष्ठता के अलावा पेंशन-योग्य सेवा का आकलन जैसे पहलू भी जुड़े हुए हैं। पूर्व में यह प्रावधान था कि स्थायी होने तक अग्निवीर विवाह नहीं कर सकते थे, इस पर भी और स्पष्टता की दरकार होगी। संभव है समय के साथ इन मुद्दों का समाधान भी तलाश लिया जाएगा।

फिर भी, इन संशोधित नियमों को वित्तीय कसौटी से भी गुजरना होगा, क्योंकि इसमें बढ़े हुए वेतन के साथ-साथ भविष्य में पेंशन और ग्रेच्युटी के भुगतान का बिंदु भी जुड़ेगा। समग्रता में देखें तो इस अतिरिक्त वित्तीय बोझ की एक बड़ी हद तक भरपाई प्रशिक्षण लागत में होने वाली बचत के जरिये हो सकती है। अग्निपथ योजना में किए गए इन बदलावों का एक महत्वपूर्ण पक्ष सैनिकों के मनोबल और उनके परिवारों की सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा से भी जुड़ा है। सेना में भर्ती होने वाले युवाओं के लिए यह केवल रोजगार का माध्यम नहीं, बल्कि देश की सेवा और सम्मान से जुड़ा हुआ अवसर होता है। ऐसे में सेवा की अवधि और भविष्य की संभावनाओं को लेकर स्पष्टता होना आवश्यक है। जब किसी जवान को अपने भविष्य की बेहतर योजना बनाने का अवसर मिलता है तो वह अधिक आत्मविश्वास और समर्पण के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सकता है। इसके साथ ही सेना को भी ऐसे प्रशिक्षित जवानों की सेवाएं लंबे समय तक मिल सकती हैं, जिन्होंने सैन्य अनुशासन, युद्ध कौशल और विभिन्न परिस्थितियों में काम करने का व्यावहारिक अनुभव हासिल किया है।



बदलते वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में भारतीय सेना के सामने चुनौतियां भी लगातार बदल रही हैं। सीमा सुरक्षा के साथ साइबर युद्ध, ड्रोन तकनीक, अंतरिक्ष आधारित निगरानी, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और आधुनिक मिसाइल प्रणालियों का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। इन क्षेत्रों में दक्षता हासिल करने के लिए केवल प्रारंभिक प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है। सैनिकों को समय-समय पर नए उपकरणों और तकनीकों से परिचित कराना तथा उनकी विशेषज्ञता को लगातार विकसित करना जरूरी है। इसके लिए प्रशिक्षण संस्थानों, सैन्य इकाइयों और तकनीकी विशेषज्ञों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना होगा। साथ ही अनुभवी सैनिकों को प्रशिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में विकसित करने पर भी ध्यान देना चाहिए।

यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सेवा विस्तार और नियमित भर्ती की प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी हो। चयन के स्पष्ट मानदंड, समयबद्ध मूल्यांकन और जवानों को उनके प्रदर्शन की जानकारी मिलने से अनावश्यक असमंजस की स्थिति पैदा नहीं होगी। सरकार और सैन्य नेतृत्व को इन बदलावों के प्रभाव का समय-समय पर आकलन भी करना चाहिए। केवल वित्तीय बचत या भर्ती की संख्या को योजना की सफलता का आधार नहीं बनाया जा सकता। वास्तविक सफलता इस बात में होगी कि सेना की युद्धक क्षमता, सैनिकों का अनुभव, अनुशासन और तकनीकी दक्षता एक साथ मजबूत हों। सेवा विस्तार के बदले हुए नियमों में बढ़ा हुआ पारिश्रमिक, संवर्धित सेवा-निधि पैकेज और वरिष्ठता से संबंधित लाभ भी शामिल हैं, लेकिन अभी भी कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन पर स्पष्टता की आवश्यकता है। इनमें सेवा विस्तार के बाद नियमित किए जाने वाले जवानों की वरिष्ठता के अलावा पेंशन-योग्य सेवा का आकलन जैसे पहलू भी जुड़े हुए हैं। पूर्व में यह प्रावधान था कि स्थायी होने तक अग्निवीर विवाह नहीं कर सकते थे, इस पर भी और स्पष्टता की दरकार होगी।

संभव है समय के साथ इन मुद्दों का समाधान भी तलाश लिया जाएगा। अग्निपथ योजना में किए गए परिवर्तन कई अनिश्चितताओं को दूर करने वाले भी हैं। इसमें सबसे बड़ी स्पष्टता तो व्यक्तिगत स्तर पर होगी, क्योंकि अग्निवीरों के समक्ष करियर को लेकर संशय के बादल छंटेंगे। यह भी सुनिश्चित होगा कि यूनिट स्तर पर प्रशिक्षित मानव संसाधनों में एकाएक कोई कमी न हो। सैन्य टुकड़ियों के बीच आंतरिक तालमेल और परिचालन संबंधी सैन्य तत्परता एवं तैयारी को भी इन बदलावों से मजबूती मिलेगी।

याद रहे कि भविष्य के युद्ध एवं संघर्षों में न केवल उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकियों की उपलब्धता, अपितु एक जटिल और प्रतिस्पर्धी रणक्षेत्र के परिवेश में उनके तत्परता से प्रभावी उपयोग करने की क्षमताएं भी उतनी ही आवश्यक होंगी। इस संदर्भ में अग्निपथ योजना भारतीय सैन्य बलों के तकनीकी रूपांतरण और बहुआयामी अभियानों यानी मल्टी डोमेन आपरेशंस-एमडीओ के संदर्भ में अवसर के साथ कुछ चुनौतियां भी पेश करती हैं। आरंभिक रूप में केवल 25 प्रतिशत अग्निवीरों को ही अंतत: स्थायी बनाने का प्रावधान एक बड़ी चुनौती बनता दिख रहा था। आज के दौर में सैन्य कौशल केवल बुनियादी प्रशिक्षण तक सीमित ही नहीं रह गया, बल्कि इस मोर्चे पर निरंतर प्रशिक्षण, व्यावहारिक अनुभव और चरणबद्ध विशेषज्ञता के माध्यम से उभरती हुई प्रौद्योगिकियों में महारत हासिल करना भी अनिवार्य है।

स्पष्ट है कि वास्तविक चुनौती एक युवा एवं तकनीकी रूप से दक्ष सैन्य बल के फायदों और दीर्घकालिक विशेषज्ञता, अनुभवी सैनिकों की मौजूदगी तथा परिचालन संबंधी निरंतरता के बीच एक संतुलित सामंजस्य स्थापित करने की है। वैसे भी, बहु-आयामी अभियानों के परिदृश्य में अग्निपथ योजना की सफलता को केवल इस बात से नहीं आंका जाना चाहिए कि सेना कितनी तेजी से नई तकनीक को अपनाती है, बल्कि उसका आकलन इस कसौटी पर किया जाना चाहिए कि सेना समय के साथ इस तकनीकी विशेषज्ञता को बनाए रखने, संस्थागत रूप देने और प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने में कितनी सक्षम है। तकनीक की समझ रखने वाले सैनिक को अपेक्षाकृत कम समय में प्रशिक्षित किया जा सकता है, लेकिन एक अनुभवी बहुआयामी योद्धा तैयार करने के लिए निरंतर निवेश, सामूहिक प्रशिक्षण और वास्तविक परिचालन अनुभव की दरकार होती है। नियत कार्ययोजना के अंतर्गत अग्निवीर अपने चार साल के कार्यकाल में हथियारों, सैन्य उपकरणों और संचार प्रणालियों के संचालन में दक्षता हासिल करते हैं। ऐसे में यदि इनमें से तीन-चौथाई जवान बाहर हो जाते हैं, तो सेना अपने ही प्रशिक्षित मानव संसाधन को गंवा देती है और उसे नए रंगरूदों के साथ पूरी प्रक्रिया नए सिरे से शुरू करनी पड़ती है। शेष 75 प्रतिशत अग्निवीरों को दो साल का अतिरिक्त सेवा विस्तार देने और उसके बाद उनकी इच्छा एवं चयन मानदंडों के दायरे में नियमित सेवा में शामिल होने का अवसर प्रदान करने का निर्णय सीधे तौर पर इस चिंता का काफी हद तक समाधान करता है।

सशस्त्र बलों में किसी भी योजना को सफल बनाने की पूरी क्षमता है और उन्होंने इन क्षमताओं का परिचय भी दिया है, लेकिन हर सफलता किसी न किसी कीमत पर ही हासिल होती है। दरअसल, अग्निपथ के संदर्भ में यूनिटों से मिले जमीनी फीडबैक और गहन मूल्यांकन के आधार पर इस योजना में जिन संशोधनों की सिफारिश वरिष्ठ सैन्य न

हथेलियों के दर्शन करें, दिन चैन से गुजरेगा

सभी चाहते हैं कि उनका नया दिन शुभ रहे, खुशियां देने वाला हो, दुख दूर करने वाला हो और सफलताएं दिलाने वाला हो। शास्त्रों के अनुसार एक सटीक उपाय बताया गया है जिससे हमारा पूरा दिन श्रेष्ठ बनता है और सभी दुख-क्लेश दूर होते हैं।

सुबह उठते ही सबसे पहले क्या करना चाहिए कि हमारा पूरा दिन अच्छा रहे और घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहे? कई लोग भगवान के दर्शन करते हैं तो कुछ अपने घर के सदस्यों का चेहरा देखते हैं लेकिन बिस्तर छोडने से पहले हमें हमारे हाथों के दर्शन करने चाहिए। कुछ लोग सोचते हैं कि हाथों के दर्शन से क्या होगा? तो इस प्रश्न का उत्तर यह है कि धर्म ग्रंथों और ऋषि-मुनियों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि हमारे हाथों की हथेलियों में दैवीय शक्तियां निवास करती हैं। इसी वजह से हमें सुबह उठते ही सबसे पहले अपने हाथों की हथेलियों के दर्शन करने चाहिए। दोनों हाथों को मिलाकर उसके दर्शन करके ही बिस्तर छोडना चाहिए। हमारे हाथ के आगे के हिस्से में (अंगुलियों की ओर) लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और नीचले भाग में नारायण यानी विष्णु का वास होता है। प्रात: हाथों के दर्शन से ही तीनों दिव्य शक्तियों के दर्शन का पुण्य मिलता है। सुबह हथेलियों का दर्शन करने के पीछे यही संदेश है कि हम परमात्मा से अपने कर्मों में पवित्रता और शक्ति की कामना करते हैं।

संसार का सारा वैभव, शिक्षा, पराक्रम हमें हाथों के जरिए ही मिलता है। इसलिए हाथों में लक्ष्मी, सरस्वती और विष्णु तीनों का वास माना गया है। कहते हैं दिन की शुरुआत अच्छी हो तो पूरा दिन अच्छा बीतता है। इसके लिए जरुरी है कि सुबह उठकर ऐसे काम करें जो आपको उत्साहित और उर्जावान बनाए रखे। न कि ऐसी गलती कर बैठें कि पूरा दिन तनाव और परेशानी में बीते।

हथेली को देखें- हथेली को देखें, शास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य को अपना दिन बेहतरीन बनाने के लिए सुबह उठकर सबसे पहले अपना हाथ देखना चाहिए। हाथ ही कर्म करता है और भाग्य को बदलने की क्षमता रखता है।

आखिर क्यों देखें हथेली-आखिर क्यों देखें हथेली, कहा जाता है कराग्रे वसति लक्ष्मी:, कर मध्ये सरस्वती। करमूले तू गोविन्द:, प्रभाते कर दर्शनम?। यानी हथेली में लक्ष्मी, सरस्वती और गोविंद का वास है। इनके दर्शन से पूरा दिन अच्छा रहता है।

मन्त्र का ध्यान: मन्त्र का ध्यान, हथेली देखते हुए इस मंत्र का ध्यान भी करना चाहिए, ताकि आपके मन में लक्ष्मी, सरस्वती और गोविंद की छवि बने।

सबसे पहले किसे छूयें-

सबसे पहले किसे छूयें, बिछावना से उतरते समय पांव सीधे जमीन पर में नहीं रखना चाहिए। धरती को माता के समान आदरणीय कहा गया है इसलिए सबसे पहले धरती का स्पर्श करके हथेली को माथे से लगाएं।

ऊर्जा का संचार-ऊर्जा का संचार, ऐसे करने से तन मन में सकारात्मक उर्जा का संचार होता है। अपने कार्य में आप बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं।

आंखों से जुड़े कुछ प्रचलित मिथ



आंखे अनमोल होती हैं, इन्ही की बदौलत हम दुनिया और इसकी खूबसूरती को देख पाते हैं, लेकिन स ही जानकारी न होने के कारण आंखों से जुड़े कई भ्रम और मिथ लोगों के बीच प्रचलित हैं।

आंखों की सच्चाई: आंखे अनमोल होती हैं। इन्ही की बदौलत हम दुनिया और इसकी खूबसूरती को देख पाते हैं। आंखे न हों तो यह दुनिया भी ऐसी नहीं होती। लेकिन क्या हम अपनी आंखों का पूरा इस्तेमाल करते हैं? और क्या हम इसके बारे में सारी जानकारी रखते हैं? शायद नहीं! बहुत गहराई में न जाया जाए तो भी आंखों के बारे में कुछ ऐसी सामान्य बातें है जो अमूमन हमें मा लूम नहीं होती। बल्की आंखों से जुड़े कई भ्रम और मिथ लोगों के बीच प्रचलित हैं। तो चलिये जानें आंखों से जुड़े ऐसे ही कुछ प्रचलित मिथक और इनकी सच्चाई के बारे में।

टीवी देखना दृष्टिहीनता का कारण बनता है: लोगों के बीच ये काफी प्रचलित है कि टेलीविजन को नजदीक से देखने से दृष्टिहीनता होती है। लेकिल सच या है कि, इलेक्ट्रोनिक्स को काफी पास से देर तक टकटकी लगाए देखने से आंखों में तनाव पैदा होता है। यह एक तत्कालिक समस्या होती है जिसके कारण बेचैनी या दृष्टि में अस्थायी कमी हो सकती है।

समस्या में ही मिले डॉक्टर से: लोग अक्सर तभी आई डॉक्टर के पास जाते हैं जब उन्हें कोई समस्या होती है। लेकिन आंखों को स्वास्थ रखने के लिए बिना समस्या के भी साल के कम से कम दो बार अपनी आंखों की जांच कराते रहना जरूरी होता है।

गाजर खाने से आंखें तेज होती हैं: ये सरासर एक मिथ ही है। ज्यादा गाजर खआने से आंखों की रोशनी बढ़ने जैसा कोई प्रमाण मौजूद नहीं है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं की आप गाजर खाएं ही नहीं। गाजर के अपने कुछ स्वास्थ्य लाभ होते हैं।

अंधेरे में पढ़ने से आंखें खराब होती हैं: आपने अक्सर लोगों से सुना हागा कि यदि अंधेरे में पढ़ोगे तो आंखें खराब हो जाएंगी। जबकि ऐसा कुछ नहीं है। कम सोशनी में पढ़ने से आंखें कुछ समय के लिए थक जरूर जाती हैं लेकिन इन्हें कोई परमानेंट डैमेज नहीं होता।



बच्चों की आंखें कमजोर होती हैं: हमारी आंखे जन्म से सात साल की उम्र तक विकसित होती रहती हैं। इसलिए यह कह पाना मुश्किल होगा कि कम उम्र के बच्चों की आंखें कमजोर हैं या नहीं। बल्कि सच तो यह है कि इस उम्र से पहले किसी व्यक्ति की आंखें कितनी स्वस्थ है यह अनुमान आम तौर पर नहीं लगाया जा सकता।

आंखो का साइज बदलता रहता है: कई लोगों की ऐसी मान्यता है कि उम्र के साथ आंखों का आकार भी बदलता रहता है। लेकिन यह सच नहीं है जन्म के बाद से हमारे शरीर के अंग बडे होने तक बढते रहते हैं लेकिन आंखो का कद हमेशा एक जैसा ही रहता है।

अमरूद की पत्तियां देती हैं बीमारियों में राहत



अमरूद का फल ही नहीं पत्तियां भी बेहद लाभदायक मानी गई है। पत्तियों के सेवन से ही कई बीमारियों को मात दी जा सकती है। कुछ उदाहरण आपके सामने हैं।

दांतों के दर्द एवं मसूड़ों की सूजन में, अमरूद के 15-20 मुलायम पत्ते तोड़कर मसलकर पानी में तब तक उबालें जब आधा पानी शेष रह जाए। इसे ठंडा करके सेंधा नमक और फिटकरी डालकर बार-बार कुल्ला करने से दंतविकारों का शमन होता है। पीड़ा एवं सूजन से छुटकारा मिलता है।

अमरूद के पत्तों पर कत्था लगाकर चबाएं। केवल अमरूद के पत्ते चबाने से भी छाले ठीक हो जाते हैं। आंख आने पर आंखों में पीड़ा, लालिमा तथा सूजन हो जाती है। अमरूद के नरम पत्तों को पीसकर पुल्टिस बनाकर पलकों पर बांधने से लाभ होता है। आधे सिर में दर्द होने पर सूर्योदय के पूर्व ही कच्चे हरे ताजे अमरूद लेकर पत्थर पर घिसकर लेप बनाएं और माथे पर लगाएं। कुछ दिनों तक नित्य प्रयोग करने से पूर्ण लाभ होता है।

कोमल पत्ते 15-20 नग लेकर पीसकर छानकर पानी के साथ पिलाने से ज्वर एवं उसके उपद्रव दूर होते हैं।

अमरूद के पत्तों का मस्तिष्क विकार, वृक्क प्रवाह और शारीरिक एवं मानसिक विकारों में प्रयोग किया जाता है। इसका तुरंत लाभ मिलता है। अमरूद के पत्तों के 10 ग्राम काढ़े को पिलाने से वमन या उल्टी बंद हो जाती है और जी भी सही रहता है।

अमरूद के कोमल पत्तों को पीसकर गठिया के वेदना युक्त स्थानों पर लेप करने से लाभ होता है। अमरूद के पत्तों के स्वरस को भरपेट पिलाने से या अमरूद खाने से भांग, धतूरा और कई अन्य

इसके इंतजार में ये भूल दे सकती है बड़ा धोखा

बहुत पुरानी बात है। तीन मित्र तक्षशिला विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए गए। तक्षशिला ज्ञान का बहुत बड़ा केंद्र था। दूर-दूर से लोग यहां शिक्षा ग्रहण करने आते। तीनों मित्र यहां एक गुरु से चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा लेने लगे। गुरु ने उन्हें चिकित्सा शास्त्र की हर बात बताई। रोग को कैसे पहचानें, औषधि कैसे बनाएं और मरीज से कैसा व्यवहार करें- सबकुछ सिखा दिया।

शिष्य भी बहुत होशियार थे। गुरु जो भी बताते तुरंत कंठस्थ कर लेते। उन तीनों को जो भी देखता, यही कहता कि ये युवक बहुत योग्य चिकित्सक बनेंगे। जो कोई इनके पास चिकित्सा के लिए आएगा, वह नए जीवन का वरदान पाकर जाएगा। कई वर्ष बीत लेकिन गुरु की शिक्षा पूरी नहीं हुई। एक दिन तीनों शिष्यों ने गुरु से पूछा, महाराज, हमें आपके गुरुकुल में आए 10 साल बीत गए। हम एक बार भी घर नहीं गए। न जाने घर पर सब लोग किस स्थिति में होंगे अब तो घर जाने की अनुमति दीजिए।

गुरु ने उन्हें गौर से देखा और बोले, मुझसे जो कुछ सीखना था, वो तुम सीख चुके। कल सुबह तुम अपने घर जा सकते हो। शिष्यों की खुशी का ठिकाना न रहा। दूसरे दिन उन्होंने अपना सामान समेटा तथा घर की ओर चल दिए। अभी गुरुकुल से निकले ही थे कि रास्ते में एक पुल आया। वहां एक व्यक्ति बैठा था। उसके शरीर पर बहुत सारे घाव थे। पुल पर कांटे बिखरे हुए थे। पहले शिष्य ने कांटों को देखा और उनसे बचकर निकल गया। दूसरे शिष्य ने कहा, यहां के लोग अंधे हैं क्या रास्ते में कांटे बिखेर कर चले गए। तीसरे शिष्य ने कांटों को देखा और बोला, गुरुजी ने बताया था कि इन कांटों के चूर्ण से घाव भरने की औषधि तैयार की जा सकती है। तीसरा युवक वहीं बैठ गया और वे कांटे इकट्ठे करने लगा। उसने कांटों को पीस कर उनका लेप तैयार किया और वहां बैठे उस व्यक्ति के शरीर पर लगाने लगा जिसके घावों से खून निकल रहा था।

तभी उनके गुरु आ गए। उन्होंने तीसरे शिष्य की पीठ थपथपाई और बोले, वत्स, सही अर्थ में तुमने ही मेरी पूरी शिक्षा ग्रहण की है। तुम्हें घर जाने की आज्ञा है। उन्होंने दोनों शिष्यों से कहा, तुम्हारी शिक्षा अभी अधूरी है। इसलिए कुछ दिन गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करो। उसके बाद ही तुम्हें घर जाने की आज्ञा होगी।

इस कहानी के 2 सबक हैं -

1. **अच्छे समय का इंतजार मत करो। प्रयास करो तो हर समय शुभ और अच्छा है। अच्छे समय का इंतजार जिंदगी के साथ बड़ा धोखा भी साबित हो सकता है।**
2. **बिना विवेक के शिक्षा व्यर्थ है। ऐसा ज्ञान, अज्ञान से भी ज्यादा भयानक हो सकता है। शिक्षा के साथ विवेक और संस्कार भी होने चाहिए।**

आठ कारणों से तिल के तेल को खाना पकाने में करें शामिल

तिल के तेल को काले और सफेद तिल के बीज से निकाला जाता है। यह तेल मैग्नीशियम, कैल्शियम, प्रोटीन, फास्फोरस और लेसिथिन का बहुत अच्छा स्रोत है। तिल का तेल स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। आइए और किन कारणों से आपको खाना पकाने के लिए तिल के तेल का इस्तेमाल करना चाहिए।

तिल का तेल: तिल के तेल को काले और सफेद तिल के बीज से निकाला जाता है। यह तेल मैग्नीशियम, कैल्शियम, प्रोटीन, फास्फोरस और लेसिथिन का बहुत अच्छा स्रोत है। तिल का तेल स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा होता है। यह आपके दिल पर कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को संतुलित बनाये रखने में मदद करता है इसलिए तिल के तेल को हृदय रोगियों को लेने की सलाह दी जाती है। साथ ही यह उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद करता है। आइए और किन कारणों से आपको खाना पकाने के लिए तिल के तेल का इस्तेमाल करना चाहिए।

खाना पकाने के लिए तिल का तेल: तेल के तिल में असंतृप्त वसा अम्ल बहुत अधिक होने के बावजूद इसमें ओमेगा-6 भरपूर मात्रा में होता है। साथ ही इसमें उच्चमात्रा में धुंआ होने के बावजूद, खाना पकाने के सभी तेलों में से इसका उपयोग से दुर्गन्ध होने की सम्भावना बहुत कम रहती है। ऐसा इस तेल में मौजूद प्राकृतिक ऑक्सीकरण रोधकों के कारण होता है। हल्के तिल के तेल में एक उच्च धूम्र बिंदु होता है और यह डीप फ्राइंग के लिए उपयुक्त होता है।

विटामिन और मिनरल से भरपूर: तिल का तेल विटामिन ई का एक स्रोत है। विटामिन ई एक ऑक्सीकरण-रोधी है और यह कोलेस्ट्रॉल स्तर कम करने में मददगार होता है। इसके साथ ही तिल के तेल में मैग्नीशियम, तांबा, कैल्शियम, आयरन, जिंक और विटामिन बी 6 भी मौजूद होता हैं। कॉपर गठिया में होने वाले दर्द से राहत प्रदान करता है। मैग्नीशियम नाड़ी और श्वसन स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। कैल्शियम, कैंसर, ऑस्टियोपोरोसिस, माइग्रेन और पीएमएस सिंड्रोम जैसी बीमारी को रोकने में मदद करता है। और जिंक हड्डियों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।



उम्र के असर को करें बेअसर: तिल के तेल में मौजूद विभिन्न घटकों में ऑक्सीकरण-रोधी और अवसाद-विरोधी गुण होते हैं। इसलिए इसका उपाय बुढ़ापे के कारण होने वाले परिवर्तनों से लड़ने और बेहतर अनुभव करने की भावना को बढ़ाने में मदद करने के लिए करने की सलाह दी जाती हैं।

दिल की बीमारियों से बचाव: तिल का तेल का प्रयोग न केवल भारत में होता है बल्कि इसका प्रयोग लगभग पूरी एशिया में होता है। इसका प्रयोग करने के बाद खाने का स्वाद बदल जाता है, यानी यह बेहतर स्वाद के लिए भी जाना जाता है। इस तेल में एंटीऑक्सीडेंट्स और एंटी-इन्फ्लेमेंटरी यौगिक होते हैं जो दिल की बीमारियों से लड़ने में सहायक होते हैं।

डायबिटीज में फायदेमंद: 2011 में हुए एक अध्ययन के अनुसार, तिल का तेल डायबिटीज रोगियों, विशेष रूप से टाइप 2 डायबीटीज से पीड़ित लोगों के लिए दवा का काम करता है। इसलिए अगर आप डायबिटीज को कंट्रोल में करना चाहते हैं तो अपने आहार में तिल के तेल को शामिल करें।

सोडियम की मात्रा कम करें: उच्च ब्लड प्रेशर का सबसे बड़ा कारण शरीर में सोडियम का बढ़ना हैं। लेकिन तिल के तेल को अपने आहार में शामिल कर आप ब्लड प्रेशर को कम करने के साथ-साथ शरीर में सोडियम की मात्रा को भी कम करने में बहुत असरदार होता है।

मानसिक दुर्बलता दूर करें: तिल के तेल को बुद्धिवर्धक भी कहा जाता है। तिल में प्रोटीन, कैल्शियम और बी कॉम्प्लेक्स बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। प्रतिदिन लगभग पचास ग्राम तिल नियमित रूप से खाने से कैल्शियम की आवश्यकता पूरी होती है। और आप मानसिक दुर्बलता, तनाव, थकान, अनिंद्रा जैसी परेशानियां ठीक होंगी।

कैंसर से बचाव: तिल के तेल में एंटी-ऑक्सीडेंट तथा मजबूत प्राकृतिक पदार्थ होते है जो कि कैंसर विरोधी होता है। इससे शरीर में कैंसर सेल की ग्रोथ नही हो पाती। इसलिए कैंसर से बचने के लिए भी अपने आहार में लिए तिल के तेल को शामिल करें।

सेक्स के बाद आलिंगन क्यों देता है सुखद अहसास

आलिंग्न प्रेम का परिचायक है। हालांकि कई लोग इसे महत्ता नहीं देते। उनका मानना होता है कि संभोग तुलनात्मक रूप से अधिक आनंददायक होता है। लेकिन, इस सोच में व्यापक स्तर पर बदलाव की आहट को महसूस किया जा सकता है। हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण के मुताबिक लोग अब संभोग से अधिक चुंबन और आलिंगन को महत्व देने और पसंद करने लगे हैं। और हो भी क्यों ना, आलिंगन करने के कई सारे स्वास्थ्य लाभ जो हैं। तो चलिये जानें कि भला क्यों सेक्स के बाद आलिंगन आपको सुखद अहसास देता है और इसके स्वास्थ्य लाभ क्या हैं।



आलिंगन है पहली पसंद: एक सर्वे के अनुसार 50 प्रतिशत से अधिक लोगों मानते हैं कि वे सहवास की बजाय चुंबन और आलिंगन को ज्यादा तवज्जो देते हैं। एक्सप्रेस डॉट को डॉट यूके नामक वेबसाइट के मुताबिक इस सर्वेक्षण में दावा किया गया है कि एक सफल संबंध में हमेशा प्रतिबद्धता, सहचर्य और हंसी-मजाक के बाद यौन संबंधों की बारी आती है। साथ ही पता चला कि अपने पार्टनर के साथ यौन संबंध बनाने के बाद सीधा बिस्तर से उठ जाना या सो जाना, हेल्दी सेक्स रिलेशनशिप के लिहाज से अच्छा नहीं है। सेक्स के बाद साथी के साथ प्रेम और स्नेह का व्यवहार रिश्ते को और भी मजबूत बनाता है। और इसमें आलिंगन अर्थात कडल अहम भूमिका निभाता है। सेक्स के बाद पार्टनर को प्यार से गले लगाना, प्यार भरी बातें करने आदि से ना सिर्फ सेक्शुअल सैटिश्फैक्शन मिलता है बल्कि अपके अपने पार्टनर के साथ जुड़ाव और प्रेम बढता है और रिश्ता मजबूत होता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो की शोधकर्ता एमी म्यूज़ के अनुसार वे दंपती जिन्हें अंतरंग संपर्क बनाने में दिक्कतें हो रही हों उनके लिए सेक्स के बाद का बॉन्डिंग टाइम बहुत जरुरी हो जाता है। म्यूज़ के मुताबिक, पार्टनर को प्यार से गले लगाने और किस करने से दोनों के बीच अपनापन बढ़ता है। एक ऑनलाइन सर्वे के परिणामों से ज्ञात हुआ कि जो दंपती सेक्स के बाद तकरीबन 15 मिनट तक एक दूसरे के साथ प्यार भरा व्यवहार (आलिंगन) करते हैं, वे अपने रिश्ते और सेक्स लाइफ दोनों में ज्यादा संतुष्ट होते हैं।

आलिंगन के स्वास्थ्य लाभ: डेली मेल के मुताबिक साथी के साथ आलिंगन करने पर रक्त में एक ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन का स्राव होता है। इससे उच्च रक्तचाप में कमी आती है, तनाव और बेचैनी कम होती है और स्मरण शक्ति भी बेहतर होती है। विएना विश्वविद्यालय के शोध के अनुसार आपको किसी को गले लगाते समय सावधानी भी बरतनी चाहिए। आप उसी को गले लगाएं, जिसे बहुत अच्छी तरह जानते हैं, वरना इसका उलट प्रभाव भी हो सकता है।

गौरतलब है कि ऑक्सीटोसिन को माता-पिता, बच्चे और दम्पतियों के बीच आपसी प्यार बढ़ाने के लिए प्रमुख कारक माना जाता है। वहीं सक्रिय सम्बंध में रह रहे दो साथियों के बीच ऑक्सीटोसिन का स्तर अधिक पाया जाता है। आलिंगन प्रतिरक्षा प्रणाली को भी बढ़ावा देता है तथा इससे दर्द से भी राहत मिलती है।



मुख्यमंत्री ने जैसलमेर में कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों से किया सीधा संवाद

भाजपा संगठन कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाने का काम करता है- मुख्यमंत्री शर्मा

जयपुर (कासं)। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अपने एक दिवसीय जैसलमेर दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने क्लब महेंद्रा में भाजपा कार्यकर्ताओं, जिला पदाधिकारियों, पार्षदों एवं जनप्रतिनिधियों से सीधा संवाद किया। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं से आगामी पंचायती राज चुनावों में भी पार्टी की भागीदारी एवं तैयारियों को लेकर चर्चा की।



कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी देश का एकमात्र ऐसा संगठन है, जो सामान्य कार्यकर्ता को आगे बढ़ाने और उसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां देने का कार्य करता है। भाजपा में कार्यकर्ता ही संगठन की असली ताकत हैं। उन्होंने नगर निकाय चुनावों के बाद पंचायती राज चुनावों में भी संगठन की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने और सभी कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने जैसलमेर जिले में हुए विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि वर्तमान कार्यकाल में अब तक जिले के लिए लगभग 3 हजार करोड़ रुपये के विकास कार्य स्वीकृत किए गए हैं। उन्होंने कहा कि उनके संज्ञान में जो कार्य लाए गए थे, उनसे भी अधिक विकास कार्यों को स्वीकृति प्रदान की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान को भी अन्य प्रदेशों की तरह विकास की निरंतरता बनाए रखते हुए आने वाले समय में भाजपा सरकार को पुन: स्थापित करने के लक्ष्य के साथ कार्य करना है। इससे पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सीमावर्ती क्षेत्र स्थित प्रसिद्ध तनोट माता मंदिर में दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली एवं समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर उन्होंने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की महिला जवानों के साथ भैया दूज का पर्व मनाया तथा उनसे आत्मीय संवाद किया।

भाजपा मीडिया प्रभारी बाबू लाल शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में खेल एवं उद्योग राज्य मंत्री के.के. विश्नोई, किसान मोर्चा के प्रदेशाध्यक्ष कैलाश चौधरी, पूर्व राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत, पूर्व मंत्री एवं किसान बोर्ड के चेयरमैन सी.आर. चौधरी, संभाग सह प्रभारी चंपालाल गेडर, प्रदेश मंत्री आईदान सिंह भाटी, विधायक छोटू सिंह भाटी, पंचायत चुनाव प्रभारी दीप सिंह धनानी, भाजपा जिलाध्यक्ष दलपत हिंगड़ा, नगर परिषद सभापति विजय डांगरा, पूर्व विधायक शैतान सिंह राठौड़ एवं जितेन्द्र सिंह भाटी तथा बाल भारती महाराज सहित अनेक भाजपा पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के पश्चात मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा विशेष विमान से जयपुर के लिए रवाना हुए।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने किए तनोट माता के दर्शन



विधिवत पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली के लिए की कामना

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को जैसलमेर के तनोट माता मंदिर में दर्शन किए। उन्होंने विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर प्रदेश की सुख, समृद्धि एवं खुशहाली के लिए कामना की। इस अवसर पर विधायक छोटू सिंह भाटी, सीमा सुरक्षा बल राजस्थान फ्रंटियर के आईजी डॉ. विकास पाठक सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं बीएसएफ के अधिकारीगण उपस्थित रहे। इससे पहले बीएसएफ के जवानों ने मुख्यमंत्री को गार्ड ऑफ ऑनर दिया।



स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में जयपुर ने राजस्थान में हासिल किया प्रथम स्थान

जयपुर (कासं)। स्वच्छता के क्षेत्र में जयपुर शहर ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में राजस्थान राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त कर पूरे प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। इस उपलब्धि के लिए आज नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित भव्य राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में जयपुर नगर निगम को 'स्टेट फर्स्ट ऑफ स्वच्छ सिटी अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा जयपुर को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया। समारोह में केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल तथा केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर जयपुर नगर निगम की ओर से माननीय नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री झाबर सिंह खर्रा, महापौर सुनील कोठारी, सचिव रवि जैन एवं नगर निगम आयुक्त ओम कसेरा ने पुरस्कार ग्रहण किया। यह उपलब्धि जयपुर शहर के लिए अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है। स्वच्छ सर्वेक्षण में राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त करना नगर निगम द्वारा स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाने, ठोस कचरा प्रबंधन को सुदृढ़ करने, नियमित सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा नागरिकों की सहभागिता बढ़ाने की दिशा में किए गए निरंतर प्रयासों का परिणाम है। इस अवसर पर नगर निगम प्रशासन ने इस उपलब्धि का श्रेय जयपुर शहर के समस्त सफाई मित्रों, निगम अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा आम नागरिकों को देते हुए कहा कि यह सम्मान किसी एक विभाग या व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे जयपुर शहर के सामूहिक प्रयासों, समर्पण और स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

भगवान बिरसा मुंडा और जनजाति गौरव दिवस पर प्रदेशभर में होंगे विविध कार्यक्रम : रावत

जयपुर (कासं)। भाजपा एसटी मोर्चा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उदयपुर सांसद मन्नालाल रावत ने बताया कि भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती एवं जनजाति गौरव सप्ताह के तहत भाजपा प्रदेशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करेगी। इन कार्यक्रमों के माध्यम से भगवान बिरसा मुंडा सहित जनजातीय समाज के महान स्वतंत्रता सेनानियों, वीर नायक-नायिकाओं, संतों और समाज सुधारकों के योगदान को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए रावत ने कहा कि जनजाति गौरव सप्ताह के तहत 14 नवंबर को विभिन्न जिलों में जनजातीय समाज के महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के स्मारकों एवं प्रतिमाओं की साफ-सफाई की जाएगी। स्मारक स्थलों पर दीपोत्सव आयोजित कर जनजातीय बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। रावत ने बताया कि जागरूकता अभियान के तहत 16 से 20 नवंबर तक खेल एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। वहीं 15 से 20 नवंबर तक युवा संवाद आयोजित किया जाएगा। राजस्थान में कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए प्रदेश स्तरीय समन्वय के लिए पूर्व महामन्त्री मोतीलाल मीणा को प्रदेश संयोजक बनाया है।



भाजपा एसटी मोर्चा राष्ट्रीय अध्यक्ष मन्नालाल रावत ने कहा कि 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती एवं जनजाति गौरव दिवस के अवसर पर जिला स्तर पर प्रभात फेरियां निकाली जाएंगी। प्रत्येक मंडल में भगवान बिरसा मुंडा सहित स्थानीय जनजातीय नायकों की प्रतिमाओं एवं चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित की जाएगी। इसके साथ ही जनजातीय छात्रावासों में संपर्क अभियान चलाकर युवाओं से संवाद किया जाएगा तथा केंद्र और राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी। इस दौरान जनजातीय समाज के युवाओं को जोड़ने के लिए युवा संवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद प्रतियोगिताएं, मेले और प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी। विभिन्न स्थानों पर शोभायात्राएं निकालकर जनजातीय समाज की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और गौरवशाली इतिहास को प्रदर्शित किया जाएगा। रावत ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में जिन जनजातीय नायकों और प्रतिभाओं का उल्लेख किया है, उनकी प्रेरक कहानियों को भी समाज के सामने लाया जाएगा।

पुराने सिक्के खरीदने का झांसा देकर महिला से लाखों की साइबर ठगी और ब्लैकमेलिंग करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का पर्दाफाश

झालावाड़ पुलिस ने बिहार में दबिश देकर गिरोह के 6 आरोपियों को किया गिरफ्तार, 2 बालक और 1 बालिका निरुद्ध

जयपुर (कासं)। झालावाड़ पुलिस अधीक्षक अमित कुमार ने बताया कि पुराने और दुर्लभ सिक्के लाखों रुपये में खरीदने का झांसा देकर एक महिला से लाखों रुपये की साइबर ठगी करने, लगातार धनराशि की मांग करने तथा फर्जी पुलिस नोटिस और एआई से तैयार फोटो-वीडियो भेजकर ब्लैकमेल करने वाले अंतरराज्यीय साइबर गिरोह का झालावाड़ पुलिस ने पर्दाफाश किया है। गिरोह के सदस्यों द्वारा बेटे को गंभीर मामले में फंसाने की धमकी देकर महिला पर मानसिक दबाव बनाया जा रहा था। लगातार आर्थिक शोषण और मानसिक प्रताड़ना से आहत होकर 56 वर्षीय महिला ने आत्महत्या कर ली थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने त्वरित अनुसंधान कर बिहार से गिरोह के 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जबकि 2 बालक और 1 बालिका को निरुद्ध किया गया है।

पुलिस अधीक्षक अमित कुमार ने बताया कि सुभाष कॉलोनी झालावाड़ निवासी मधुबाला ठाकुर ने अज्ञात साइबर ठगों के सुनियोजित जाल, लगातार अवैध वसूली और गंभीर मानसिक उत्पीड़न से परेशान होकर आत्महत्या कर ली थी। इस संबंध में मृतका की पुत्री कल्पना ठाकुर ने 1 नवंबर 2026 को पुलिस थाना कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज करवाई। प्रारंभ में आत्महत्या के लिए उकसाने की धाराओं में प्रकरण दर्ज कर पुलिस ने मृतका के मोबाइल फोन का तकनीकी विश्लेषण शुरू किया। अनुसंधान के दौरान मिले डिजिटल साक्ष्यों और डाटा से ठगी के तार बिहार से जुड़े होने की जानकारी सामने आई। इसके बाद प्रकरण में जबरन वसूली, धोखाधड़ी और आईटी एक्ट की धाराएं भी जोड़ी गईं। मामले की संवेदनशीलता



और गंभीरता को देखते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भागचन्द्र मीणा के निर्देशन तथा वृत्ताधिकारी हर्षराज सिंह खरेड़ा के निकटतम सुपरविजन में विशेष अनुसंधान दल का गठन किया गया। टीम ने मृतका के मोबाइल फोन, बैंक खातों, ऑनलाइन ट्रांजेक्शन, यूपीआई क्यूआर कोड और कॉल डिटेल का बारीकी से विश्लेषण किया। विभिन्न बैंक खातों में धनराशि के लेन-देन की कड़ियां जोड़ते हुए संदिग्ध खाताधारकों और गिरोह के सदस्यों की पहचान की गई। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए करीब 1500 किलोमीटर दूर बिहार में कार्रवाई की योजना बनाकर तीन विशेष पुलिस टीमें गठित की गईं। इन टीमों को थानाधिकारी बकानी हरि सिंह, थानाधिकारी रायपुर मोहनलाल और थानाधिकारी मण्डावर रोहित कुमार के नेतृत्व में बिहार रवाना किया गया। झालावाड़ पुलिस की टीमों ने बिहार के सहरसा, मधेपुरा और खगड़िया जिला पुलिस के विशेष सहयोग से 6 नवंबर 2026 को विभिन्न ठिकानों पर योजनाबद्ध तरीके से दबिश दी। कार्रवाई के दौरान गिरोह के मुख्य आरोपी अजीत यादव सहित कुल 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया तथा अपराध में संलिप्त 2 बालक और 1 बालिका को निरुद्ध किया गया। आरोपियों के कब्जे से अपराध में संपर्क और लेन-देन के लिए इस्तेमाल किए गए मोबाइल डिवाइस भी बरामद किए गए हैं।

सभी आरोपियों को स्थानीय न्यायालय से ट्रांजिट रिमांड प्राप्त कर झालावाड़ लाया गया और न्यायालय में पेश किया गया। गिरफ्तार 6 आरोपी तीन दिवस के पुलिस रिमांड पर हैं, जबकि विधि से संघर्षरत तीनों बालक-बालिकाओं को बाल संप्रेषण गृह में दाखिल करवाया गया है। मामले में आगे का अनुसंधान जारी है। आरोपियों ने महिला को डराने के लिए पुलिस थाना झालावाड़ का एआई से तैयार फर्जी फोटो भी भेजा, जिसमें महिला पुलिसकर्मियों के सामने 500-500 रुपये के नोटों की गड्डियां रखी दिखाई गई थीं। इसके अतिरिक्त दिल्ली पुलिस के नाम से फर्जी लेटरहेड और नोटिस तैयार कर भेजा गया, जिसमें महिला का नाम, पता और फोटो लगाकर 5.50 लाख रुपये की राशि जब्त होने की झूठी जानकारी दी गई। गिरोह के सदस्यों ने महिला को यह धमकी भी दी कि उनके बेटे को गंभीर आपराधिक मामले में फंसा दिया जाएगा और उसकी जान खतरे में पड़ सकती है।

मुख्य आरोपी अजीत यादव तथा दो विधि से संघर्षरत बालक-बालिका द्वारा वॉयस कॉल और वॉयस नोट के माध्यम से महिला को डराने-धमकाने के तथ्य सामने आए हैं। लगातार आर्थिक नुकसान, कर्ज और परिवार को नुकसान पहुंचाने की धमकियों के कारण महिला गंभीर मानसिक दबाव में आ गई थीं। एसआईटी ने मृतका के एचडीएफसी और एसबीआई बैंक खातों का गहन विश्लेषण किया। जांच में सामने आया कि आरोपियों ने विभिन्न बैंक खातों और यूपीआई क्यूआर कोड के माध्यम से महिला से अलग-अलग किस्तों में धनराशि ट्रांसफर करवाई थी। जांच के दौरान रंजू देवी के पीएनबी खाते में 64 ट्रांजेक्शन के जरिए 2,36,715 रुपये, सतीश कुमार के एसबीआई खाते में 24 ट्रांजेक्शन के जरिए 1,03,481 रुपये और मंजू देवी के एसबीआई खाते में 12 ट्रांजेक्शन के जरिए 36,501 रुपये ट्रांसफर होना पाया गया।

इसी प्रकार खुशबू कुमारी के आईपीपीबी खाते में भी संदिग्ध ट्रांजेक्शन सामने आए। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर खातों की जांच में सतीश कुमार के खाते के विरुद्ध पूर्व से 13, मंजू देवी के खाते के विरुद्ध 9 तथा रंजू देवी के खाते के विरुद्ध 2 साइबर फ्रॉड शिकायतें दर्ज होना पाया गया। इससे गिरोह की व्यापक साइबर ठगी गतिविधियों के संकेत मिले हैं।

पुराने सिक्कों के नाम पर ठगी का जाल, फिर शुरू होती थी ब्लैकमेलिंग

पुलिस जांच में सामने आया कि गिरोह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पुराने और दुर्लभ सिक्कों एवं नोटों को लाखों रुपये में खरीदने के आकर्षक विज्ञापन प्रसारित करता था। इसी झांसे में मृतका भी आ गईं। उनके मोबाइल में 'RJGYANI OLD COIN COMPANY' नाम से संपर्क स्थापित किया गया। शुरुआत में आरोपियों ने छोटी रकम ली और बाद में अलग-अलग बहाने बनाकर लगातार पैसे मांगने शुरू कर दिए। जब महिला ने अपनी आर्थिक असमर्थता जताते हुए रकम वापस मांगी, तो आरोपियों ने उन्हें डराना और ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। जांच के अनुसार, आरोपियों ने महिला को व्हाट्सएप पर एआई से तैयार किए गए डरावने फोटो और वीडियो भेजे। इनमें पुलिसकर्मियों द्वारा एक युवक की पिटाई का वीडियो, दुर्घटनाग्रस्त कार और घायल व्यक्ति की तस्वीरें तथा अस्पताल के नाम से तैयार फर्जी बिल शामिल थे। इनका इस्तेमाल इलाज और अन्य बहानों से अतिरिक्त धनराशि वसूलने के लिए किया गया।

न्यूज इनबॉक्स

दिवंगत जसवंत यादव को सुधा यादव और मदन दिलावर ने दी श्रद्धांजलि

जयपुर (कासं)। कर्नाटक की राज्यपाल श्रीमती सुधा यादव तथा शिक्षा एवं पंचायती राज विभाग मंत्री मदन दिलावर ने बहरोड विधायक एवं पूर्व मंत्री दिवंगत डॉ. जसवंत सिंह यादव के निधन पर उनके अलवर स्थित आवास पर पहुंचकर उनके चित्र पर श्रृद्धासुमन अर्पित कर भावभीनी श्रृद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संतृप्त परिवारजनों का ढांढस बंधाया। इस दौरान राज्यसभा सांसद डॉ. सतीश पूनियां, थानागाजी विधायक कांति प्रसाद मीणा, पूर्व विधायक जयराम जाटव, बनवारी लाल सिंघल एवं ज्ञानदेव आहूजा, जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता ने भी दिवंगत डॉ. जसवंत सिंह यादव को श्रृद्धासुमन अर्पित कर भावभानी श्रृद्धांजलि अर्पित की।

हाथोज धाम में धूमधाम से मनाया गया दीपोत्सव

जयपुर (कासं)। श्री दक्षिणमुखी बालाजी महाराज मंदिर हाथोज धाम में दीपावली का पावन पर्व बड़े ही धूमधाम एवं श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हवामहल विधायक एवं हाथोज धाम पीठाधीश्वर स्वामी बालमुकुन्दाचार्य महाराज ने विधि-विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ मां महालक्ष्मी, भगवान कुबेर, मां सरस्वती एवं भगवान गणेश की पूजा-अर्चना कर प्रदेश एवं देश में सुख, शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की मंगलकामना की। पूजन के पश्चात भगवान की भव्य महाआरती की गई। दीपों की रोशनी से मंदिर परिसर जगमगा उठा और पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। दीपावली के पावन अवसर पर स्वामी बालमुकुन्दाचार्य महाराज से आशीर्वाद एवं धोक लगाने के लिए श्रद्धालुओं एवं शुभचिंतकों का दिनभर आवागमन लगा रहा। बड़ी संख्या में लोगों ने हाथोज धाम पहुंचकर महाराज श्री से मुलाकात की, धोक प्रणाम किया एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। पूरे दिन हाथोज धाम में श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह का माहौल बना रहा।

श्री श्याम भरोसे परिवार का द्वितीय वार्षिकोत्सव 14 को, तैयारियां जोरों पर

जयपुर (कासं)। जयसिंहपुरा खोर में श्री श्याम भरोसे परिवार के तत्वावधान में द्वितीय वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। अब कार्यक्रम में सिर्फ 3 दिन बाकी हैं, जिसे लेकर श्याम प्रेमियों में खासा उत्साह है। आयोजन समिति के अनुसार शनिवार, 14 नवम्बर 2026 को सायं 6.15 बजे से हरि इच्छा तक 'एक शाम खाटूवाले के नाम' भजन संध्या का आयोजन होगा। भजन संध्या का सीधा प्रसारण केशव आर्ट्स पर लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से भी किया जाएगा। भजन संध्या में देश के प्रसिद्ध भजन गायक अपनी प्रस्तुति देंगे। इनमें कान्हा व्यास-ग्वालियर, वंशिका शर्मा-फरीदाबाद, विपिन गुप्ता-दिल्ली, गोपाल सैन-जयपुर, सोमेश जैन-जयपुर, लक्की लालवानी-जयपुर एवं आदित्य छीपा-जयपुर शामिल हैं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी बालमुकुंद आचार्य, विधायक हवामहल पं. पंकज मिश्रा, महंत श्री श्याम प्राचीन मंदिर, समाजसेवी दौलत त्रिलोकानी उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम स्थल ड्रीम पैलेस, 2 नंबर बस स्टैण्ड के पास, कुंड रोड, जयसिंहपुरा खोर, जयपुर रखा गया है। आयोजकों दयाल कोड़वानी, मनोज हरपलानी, राजा सोनी एवं रवि नैनवानी ने सभी श्यामप्रेमी एवं श्यामसेवी संस्थाओं को इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित किया है।

कार्तिक महोत्सव में भक्ति की बही धारा

जयपुर (कासं)। आस्था भक्ति श्रद्धा के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में बुधवार 11 नवंबर (चंद्र दर्शन) के पावन दिवस के साथ कार्तिक महोत्सव का आरंभ हुआ। कार्तिक महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ, गीता जी, कार्तिक महात्म की कथा का शुभारंभ हुआ। संत महात्माओं द्वारा कार्तिक माह की विशेषताओं का वर्णन करते हुए बताया कि कार्तिक माह में नाम जप, दान पुण्य, स्नान का विशेष महत्व है। पूज्य गुरुदेव हजारा हजूर सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अमोलक वाणी में प्रात: 8 बजे से भक्ति का रसपान हुआ। संतो ने बताया कि 11 नवंबर बुधवार से 24 नवंबर मंगलवार तक नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं का भजन सत्संग के साथ साथ कार्तिक महात्म्य की कथा का वाचन भी होगा। गुरुवार 12 नवंबर से प्रतिदिन प्रात: 6.00 बजे से 7.00 बजे तक हरि नाम 'प्रभात फेरी' श्री अमरापुर स्थान में परिसर में निकाली जाएगी । कार्तिक महोत्सव के अंतर्गत 15 नवंबर रविवार को आचार्य श्री सदुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का मासिक जन्मोत्सव चौथ पर्व, 17 नवंबर मंगलवार को गौपाष्टमी पर्व सदगुरु टेऊँराम गौशाला मानसरोवर में बड़े ही श्रद्धा भाव से मनाया जाएगा। अनंत विभूषित प्रेम प्रकाश संप्रदायचार्य आचार्य सदुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के जीवन पर आधारित प्रेरणादायक सिन्धी फिल्म युगपुरुष सतगुरु टेऊँराम पार्ट -2 के पोस्टर का भव्य विमोचन हजारा हजूर पूज्य गुरुवर सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा किया गया। प्रेरणादायक सिन्धी आध्यामिक फिल्म के अंतर्गत आचार्य श्री जी के जीवन का संपूर्ण वृतांत बहुत ही सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया गया।

रंग, रचनात्मकता और लोक संस्कृति का महासंगम, 21से गणगौर कला महोत्सव

जयपुर (कासं)। गुलाबी नगरी में कला, संस्कृति और रचनात्मकता का भव्य संगम होने जा रहा है। गणगौर टेलीविजन, सच बेधड़क समाचार पत्र, विजुअल आर्ट डिपार्टमेंट, राजस्थान यूनिवर्सिटी एवं प्रतिभा एजुकेशनल डेवलपमेंट रिसर्च सोसाइटी की ओर से 21 से 25 नवंबर तक पांच दिवसीय गणगौर जयपुर कला महोत्सव का आयोजन जवाहर कला केंद्र के शिल्पग्राम में किया जाएगा। इसमें 200 से अधिक ख्यातिप्राप्त कलाकार, चित्रकार, संगीतकार एवं नृत्यकार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। महोत्सव में देशभर के कलाकारों की पेंटिंग, स्कल्पचर, डिजाइन, क्राफ्ट और आर्ट इंस्टॉलेशन से शिल्पग्राम सजाया जाएगा। कला जगत की प्रतिष्ठित हस्तियां विभिन्न विषयों पर चर्चा कर अपने विचार साझा करेंगी। पांचों दिन राजस्थान के लोक संगीत और लोक नृत्य के रंगारंग कार्यक्रम शाम 6 से 9 बजे तक आयोजित होंगे। आर्ट इंस्टॉलेशन, रंगोली, फेस पेंटिंग, पोर्ट्रेट पेंटिंग एवं मेहंदी सहित कई प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। युवा कलाकारों के लिए विशेष आर्ट वर्कशॉप और लाइव डेमो भी होंगे। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे तथा प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी मिलेंगे। महोत्सव का विशेष आकर्षण 200 फीट लंबे कैनवास पर 'आओ बनाओ पेंटिंग' थीम के तहत सामूहिक पेंटिंग होगा। इसमें कोई भी व्यक्ति अपनी रचनात्मक प्रतिभा दिखा सकेगा। अंतिम दिन पेंटिंग्स की नीलामी होगी और बिकने वाली कलाकृति की राशि कलाकार को मौके पर ही दी जाएगी।

आयोजक बीएम चांदना एवं विजुअल आर्ट विभाग के प्रमुख रजत पंडेल ने बताया कि महोत्सव में विभिन्न राज्यों के कलाकार अपनी कलाकृतियां प्रदर्शित करेंगे। सच बेधड़क समाचार एवं गणगौर टेलीविजन के प्रवक्ता शिशिर अवस्थी ने बताया कि पांचों दिन प्रसिद्ध राजस्थानी लोक कलाकार और संगीतकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक कैलाश त्रिवेदी के लिए उदय प्रिन्टर्स 43-ए, माली कॉलोनी चांदपोल बाहर जयपुर से मुद्रित एवं डी-38, प्रधानपथ, चौमू हाउस, सी स्कीम, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक कैलाश त्रिवेदी* । *पीआईबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार।
फोन: 0141-4038281, Email:- lokjeewanjpr@gmail.com भीलवाड़ा कार्यालय: 207-214, नागौरी गार्डन, लोकजीवन कॉम्पलेक्स, भीलवाड़ा। फोन: 01482-355985, Email:- lokjeewan@gmail.com, मो. 8306792625